



जैन प्रकाश

संपादक : अमित जैन

मूल्य : ₹ 10
भाषा : हिन्दी
वर्ष : 70
अंक : 1
पृष्ठ : 8

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का साप्ताहिक मुखपत्र

PRGI : DLHIN/25/A4261
Postal Regn. No. DL(ND) 11/6078/2026-27-2028
U (C)

Date of Publication : 28-02-2026
Date of Posting : 07/08-03-2026
E-mail : aissjc1906@gmail.com

Address Here

राष्ट्रीय अध्यक्ष : अतुल जैन | राष्ट्रीय महामंत्री : डॉ. अमितराय जैन | राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष : विनय कुमार जैन



ग्रहण करने व त्यागने योग्य ध्यान

- अध्यात्मयोगी आचार्य सम्राट् पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा.

जैन दर्शन में ध्यान का अत्यधिक महत्त्व है। ध्यान दो तरह के हैं त्यागने योग्य व ग्रहण करने योग्य।

ध्यान : त्यागने योग्य ध्यान जीव मिथ्यात्व के अन्तर्गत करता है, अज्ञान के अन्तर्गत करता है, मोह के अन्तर्गत करता है। अनादिकाल से जीव अज्ञान के कारण पुद्गल का ध्यान करता आया है, जिसके परिणाम स्वरूप उसे चार गति चौरासी लाख जीव योनि मिली।

परिणाम स्वरूप हर भव में उसे एक शरीर मिलता है, देह मिलती है, अज्ञानवश, मोहवश वह उस देह को ही मैं मान लेता है और जीवन भर उस देह की चिन्ता व चिन्तन करता है। देह को साता पहुँचाने के लिए सुख-सुविधाओं के साधन जुटाने में लगा रहता है और पुण्य उदय से उसे सुख-सुविधा के साधन मिल जाते हैं। उन्हीं में वह तृप्त हो जाता है और वह पुण्य कमाने के लिए श्रम करता है। पाप का उदय आने पर दुःखी होता है और पाप को दबाने के लिए पुरुषार्थ करता है। इस प्रकार जीवन की बहुमूल्य श्वासें इसी कार्य में समाप्त हो जाती हैं। इनमें सफल हो जाने पर उसे वह अपने जीवन की सफलता मानता है। इस कारण वह सत्य की ओर अभिमुख ही नहीं होता।

वस्तु और स्थान का ध्यान मिथ्या ध्यान है, आर्त रौद्र ध्यान है, जो हमारे कर्म का संसार बढ़ाता है। हमने वर्ष 2026 को आत्म ध्यान वर्ष घोषित किया। मिथ्या ध्यान का त्याग करें और सम्यक् ध्यान को उपादेय मानकर आत्मसात् करें।

आज के युग में व्यक्ति धर्म की कुछ क्रियाओं को करके तृप्त हो जाता

है कि मैं धार्मिक हो गया। वस्तुतः धर्म के सच्चे स्वरूप को हमें समझना होगा। धर्म को समझने के पहले हमें सत्य का ज्ञान प्राप्त करना होगा। ज्ञान अर्थात् सत्य का ज्ञान। सत्य वह है जो शाश्वत है। पहले भी था अब भी है तथा भविष्य में भी रहेगा उस सत्य का ज्ञान होना आत्म-ज्ञान है, भेद-विज्ञान है। यह विश्व दो तत्वों से बना है जीव और अजीव। उपादेय जीव तत्त्व है। अजीव द्रव्य जीव की मुक्ति में सहयोगी तत्त्व है।

जीव का स्वभाव ही धर्म है। जीव, जीव का ध्यान करता है तब वह धर्ममय जीवन जीता है। उसके जीवन में धर्म घटित होता है, जिसे हम शुक्ल ध्यान कहते हैं। जिन महापुरुषों ने अपने जीव का ध्यान किया वे अरिहंत सिद्ध बनकर सर्वज्ञ सर्वदर्शी बन गये। उनके मार्ग पर चलने वाले आचार्य, उपाध्याय, साधु पंचपरमेष्ठी बन गये।

आज महापुरुषों की स्तुति, भक्ति, सेवा आराधना, धर्म ध्यान के रूप में प्रसिद्ध हैं। व्यवहार धर्म, देव-गुरु धर्म पर श्रद्धा करते हुए, निश्चय धर्म, आत्मा को आत्मा में स्थित करने के लिए शुक्ल ध्यान की ओर ले जाना है। जीव की मुक्ति लिए आत्मा को आत्मा में 48 मिनट के लिए ठहराना है। इस विधि से हम भी सर्वज्ञ बन सकते हैं।

वर्ष 2026 में प्रत्येक आत्मार्षी आत्म ज्ञान भेद-विज्ञान से आत्म - ध्यान के द्वारा शुद्ध धर्म, निश्चय धर्म से, आत्म धर्म में स्थित होकर 24 घण्टे आनन्द शांति सुख समृद्धिमय जीवन जीने की कला से अपने निराकार आत्मा का ध्यान कर, आत्मा पर श्रद्धा कर अपने लक्ष्य सिद्धशिला की ओर आगे बढ़े, यही मंगल कामना।



रंग, श्रद्धा और शक्ति का संगम जैन प्रकाश की नई शुरुआत

- अतुल जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष - जैन कॉन्फ्रेंस E-mail : ajvk1973@gmail.com

प्रिय पाठकों !

बड़े ही हर्ष और गौरव के साथ 'जैन प्रकाश' का प्रथम साप्ताहिक अंक आप के कर कमलों में डाक के माध्यम से प्रेषित किया जा रहा है। जो केवल एक प्रकाशन की शुरुआत नहीं, बल्कि विचार, संवाद और संगठनात्मक चेतना की एक नई यात्रा का शुभारंभ है।

मार्च के प्रथम साप्ताहिक का समय विशेष रूप से प्रेरणादायी है। जिसमें रंगोत्सव होली का उल्लास, अनेक पूज्य गुरु भगवंतों के पावन जन्म, दीक्षा एवं स्मृति दिवस की श्रद्धामयी अनुभूति तथा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आत्म गौरव, ये सभी प्रसंग हमें जीवन के विविध आयामों की ओर उन्मुख करते हैं। होली का पर्व हमें भीतर के राग-द्वेष और कटुता को त्यागकर समरसता के रंगों में रंगने का संदेश देता है। यह अवसर है कि हम बाहरी उत्सव के साथ-साथ आंतरिक शुद्धि का भी संकल्प लें।

दुनिया भर में 8 मार्च को मनाया जाने वाला अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस हमें नारी शक्ति के सम्मान, सहभागिता और सशक्तिकरण की प्रेरणा देता है। जैन समाज में मातृशक्ति ने सदैव संस्कार, सेवा और संयम की परम्परा को पोषित किया है। आज आवश्यकता है कि हम उनके योगदान को और अधिक सशक्त मंच प्रदान करें तथा समाज निर्माण की प्रक्रिया में उनकी सक्रिय भूमिका को सम्मानपूर्वक स्वीकार करें।

पूज्य गुरु भगवंतों के जन्म, दीक्षा और स्मृति दिवस हमें त्याग, तप और अनुशासन की उस उज्ज्वल परंपरा का स्मरण कराते हैं, जिसने हमारे समाज को आध्यात्मिक आधार प्रदान किया है। उनके आदर्श हमारे लिए केवल इतिहास नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की दिशा हैं।

'जैन प्रकाश' का यह प्रथम अंक इसी समन्वित भाव-श्रद्धा, समरसता और सशक्तिकरण को लेकर आपके समक्ष उपस्थित है। हमारा उद्देश्य है कि यह समाचार पत्र समाज का दर्पण ही नहीं, बल्कि उसकी दिशा निर्धारित करने वाला एक सार्थक विचार मंच बने। इसमें धर्म, दर्शन, संगठन, युवाशक्ति, महिला जागरण और सम-सामयिक विषयों पर सार्थक संवाद निरंतर प्रकाशित होता रहेगा।

मैं सभी साधु-साध्वीवृंद, श्रावक-श्राविकाओं, युवा साथियों और प्रबुद्धजनों से आग्रह करता हूँ कि वे इस नवप्रयास में अपनी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करें। अपने विचार, लेख और सुझाव देकर 'जैन प्रकाश' को समाज की सशक्त सामूहिक आवाज बनाएं।

आइए, हम इस नए अध्याय का स्वागत सकारात्मक सोच, एकात्मता और सेवा-भाव के साथ करें। रंगोत्सव की मधुरता, गुरुवर्य की प्रेरणा और मातृशक्ति के सम्मान के साथ यह यात्रा प्रारंभ हो। इन्हीं मंगल भावनाओं सहित आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

सम्पादकीय परंपरा की विरासत, नवयुग की पहल

- डॉ. अमितराय जैन, राष्ट्रीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail : amitrai Jain78@gmail.com

आप सभी को यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि 27 फरवरी 2026 को हमारे केन्द्रीय कार्यालय जैन भवन में आयोजित राष्ट्रीय प्रबन्ध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा एवं साधारण सभा की बैठकें अत्यंत उत्साहपूर्ण एवं संगठनात्मक सौहार्द के साथ सम्पन्न हुईं। यह आयोजन केवल औपचारिक बैठक नहीं, बल्कि संगठन की सक्रियता, एकजुटता और दूरदर्शी चिंतन का परिचायक रहा।

समय परिवर्तनशील है और जो संस्थाएँ समय की गति को पहचानते हुए स्वयं को परिष्कृत एवं प्रासंगिक बनाती हैं, वही समाज का दीर्घकाल तक मार्गदर्शन कर पाती हैं। संस्था

का मुखपत्र 'जैन प्रकाश', जिसने एक शताब्दी से अधिक समय तक जैन समाज की चेतना, चिंतन और गतिविधियों को स्वर दिया है, अब एक नवीन स्वरूप साप्ताहिक समाचार पत्र के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है। यह केवल समाचारों का संकलन नहीं, बल्कि धर्म, दर्शन, संगठन, युवाशक्ति, महिला सशक्तिकरण तथा समकालीन विषयों पर सकारात्मक और दिशा-दर्शक विमर्श का मंच बनें, इसी उद्देश्य से इसका यह प्रथम साप्ताहिक अंक प्रकाशित किया गया है। (शेष पृष्ठ 3 में)



J. P. Jain Foundation

(स्व. श्री जय प्रकाश जैन की पुण्य स्मृति में स्थापित)

सेवा, करुणा और अहिंसा के मूल्यों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहयोग पहुँचाने के उद्देश्य से निम्न जनकल्याणकारी सेवा-कार्यों का सतत् संचालन



✿ जैन हेल्थकेयर सेंटर के माध्यम से निःस्वार्थ एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं।

✿ भिवानी में फूड बैंक द्वारा जरूरतमंदों को नियमित भोजन वितरण।

✿ दर्द निवारक - महाउपयोगी नाकोडा भैरव लाल तेल का देश भर में निःशुल्क वितरण।

✿ निर्धन विधवाओं एवं असहाय वर्गों को राशन सहायता।

✿ जीव-दया के संरक्षण एवं करुणा आधारित सेवा अभियान।

✿ साधर्म्य बंधुओं को हर प्रकार की सहायता।

📍 MATUSHRI BHAWAN, 537/5, Doodh Wali Gali, Mehrauli, New Delhi-110030 📞 9650485980 📧 Email: foundationjpjain@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2025-27

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अतुल जैन, दिल्ली - मो. : 98110 75336			श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन, इन्दौर	94250 62147
राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष	राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष	श्री मीठालाल कांकरिया जैन, औरंगाबाद	98226 71574
प्रो. डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत : 98373 94448	श्री विनयकुमार जैन, पानीपत : 83968 00000	श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली : 98116 14567	श्री वसंत लोढ़ा जैन, अहमदनगर	94212 05000
राष्ट्रीय चेयरमैन	राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष	श्री पारस दुग्गड़ जैन, धुलिया	94231 93447
श्री विजय जैन, पानीपत : 98966 00022	श्री नरेश बोहरा जैन, मुंबई : 76665 40600	श्री जसवंत जैन, दिल्ली : 98104 35108	श्री कैलाश प्रकाश बाफना जैन, औरंगाबाद	93726 66999
निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय मंत्री : श्री शैलेष शोभाचंद संचेती जैन, वैजापुर	94214 18121	श्री सुरेश सिंघवी जैन, मुंबई	98212 87789
श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	जैन कॉन्फ्रेंस आत्म-ध्यान योजना		श्री विलास राठोड़ जैन, पुणे	98901 74007
पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री शशिकांत 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515	श्री आकाश मादरेचा जैन, सूरत	94287 45537
श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद	राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोहित छाजेड़ जैन, औरंगाबाद	94207 64456	राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री	
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली	हर प्रांत जैन भवन योजना		श्री दीपक जैन, दिल्ली	93508 70065
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली	राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक कुमार एन. पगारिया जैन, पुणे	94220 36831	श्री संजय जैन 'निशा', लुधियाना	94172 53101
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर	राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री विनय कुमार नाहटा जैन, दिल्ली	98110 12512	श्री नेमीचंद सोलंकी जैन, पुणे	93710 89896
श्री पारस मोदी जैन, मुंबई	राष्ट्रीय मंत्री : श्री प्रफुल्ल कोठारी जैन, पुणे	90110 17777	श्री संदीप जैन 'सन्नी', जम्मू	94191 90527
राष्ट्रीय पर्यवेक्षण समिति	राष्ट्रीय जन कल्याण योजना		श्री महेन्द्र जैन, सवाई माधोपुर	94626 72015
राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली	राष्ट्रीय अध्यक्ष : सतिन्दर वीर जैन	98110 70722	राष्ट्रीय संगठन मंत्री	
राष्ट्रीय पर्यवेक्षक : श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	राष्ट्रीय चेयरमैन : सुदर्शन जैन	93108 99904	श्री जयप्रकाश ललवानी जैन, चेन्नई	99412 45660
राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक	राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : संजय जैन	98187 25000	श्री संजीव जैन 'आनंदम्', दिल्ली	93122 40901
श्री महावीर रांका जैन, पोलुर	राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : नंदीवर्धन जैन	98110 39625	श्री नितिन चोपड़ा जैन, पुणे	98224 07446
श्री विमलप्रकाश जैन, जालंधर सिटी	राष्ट्रीय मंत्री : कनिका संदीप जैन	96549 73690	श्री प्रकाश कोठारी जैन, खार, मुंबई	98200 83919
श्री संजय जैन, दिल्ली	विहारधाम योजना		श्री विलोक जैन, दिल्ली	98681 06607
श्री डिपिन नेमनाथ जैन, इन्दौर	राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार चोपड़ा जैन, नाशिक	94229 44800	संविधान संशोधन समिति	
श्री विजयकांत कोठारी जैन, पुणे	राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री तनसुख झामड़ जैन, औरंगाबाद	98226 59910	श्री अतुल जैन, दिल्ली	98110 75336
राष्ट्रीय समन्वय समिति	राष्ट्रीय मंत्री : श्री मुकेश जैन 'सांड', मोहाली	93185 93599	डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
श्री प्रशांत जैन, 'गांधरा' दिल्ली (मुख्य समन्वयक)	जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय डिजिटलईजेशन योजना		डॉ. अशोक पगारिया जैन, पुणे	94220 36831
श्री सुरेशकुमार लुणावत जैन, चेन्नई (जोन - 1)	राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री सुभाष जैन 'लिली', गिदड़वाहा	98146 99393	श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद	92463 61008
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना (जोन - 2)	राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री राजीव सुनील सांखला जैन, बेंगलोर	98445 46014	श्री शशिकुमार 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
श्री कंवरलाल सुरिया जैन, भीलवाड़ा (जोन - 3)	राष्ट्रीय वाईस चेयरमैन : श्री संजय जैन 'चिली', दिल्ली	93501 32274	श्री कांतिकुमार चोपड़ा जैन, नाशिक	94229 44800
श्री ईश्वर बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर (जोन - 4)	राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री राकेश जैन, दिल्ली	98101 93101	श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर	77738 66000
श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत (जोन - 5)	राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनधीर जैन, लुधियाना	98141 05020	श्री एस. के. जैन, दिल्ली	98102 78217
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय मीडिया संचार योजना		श्री सुनील चोपड़ा जैन, नाशिक	94239 63100
श्री महेन्द्र बोकरिया जैन, दिल्ली	राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय जैन, दिल्ली	93191 87434	जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय अनुशासन समिति	
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अजय जैन 'प्रथम', दिल्ली	97117 74004	राष्ट्रीय संयोजक : श्री एस. के. जैन 'सी. ए.', दिल्ली	98102 78217
श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बेंगलोर	राष्ट्रीय मंत्री : लक्ष्मीलाल वीरवाल जैन	94604 45060	सदस्य : श्री जसवंत जैन, दिल्ली	98104 35108
श्री पुखराज मेहता जैन, बेंगलोर	राष्ट्रीय युवा शाखा		सदस्य : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	95400 02778
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, हैदराबाद	अध्यक्ष : श्री विपुल जैन, दिल्ली	87662 14456	सदस्य : श्री विनयकुमार जैन, पानीपत	83968 00000
श्री दिनेश कुमार भलगत जैन, चेन्नई	चेयरमैन : श्री अंकुर जैन, दिल्ली	98711 98111	सदस्य : श्री शशिकुमार 'पिन्टू' कर्नावट जैन, मालेगांव	98239 55515
श्री राजन जैन, लुधियाना	कार्याध्यक्ष : श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद	93767 37111	सदस्य : श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
श्री विमलचंद जैन, अम्बाला	वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मंजीत शांतिलाल कोठारी जैन, सूरत	93745 44138	सदस्य : श्री विपुल जैन, दिल्ली	87662 14456
श्री पुष्कर जैन, मेरठ	महामंत्री : श्री अमित कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	91522 11555	जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार समिति	
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली	कोषाध्यक्ष : श्री मुनीष पकंज जैन, दिल्ली	99998 38345	एडवोकेट श्री नरेश कुमार जैन, रानियां	90504 00009
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	राष्ट्रीय महिला शाखा		एडवोकेट श्री सुनील जैन, चण्डीगढ़	98141 90422
श्री जयकुमार जैन, दिल्ली	अध्यक्षा : श्रीमती संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326	एडवोकेट श्री नवीन जैन, पानीपत	90347 19097
श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	चेयरमैन : श्रीमती अनामिका कुलदीप तलेसरा, सूरत	94278 08401	राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार समिति	
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली	वाईस चेयरमैन : श्रीमती मीनाक्षी विनय जैन, दिल्ली	98187 44166	सदस्य : श्री संजय ताराचंद कोटेचा जैन, जलगांव	99237 11711
श्री नेमीचंद धाकड़ जैन, उदयपुर	वरिष्ठ उपाध्यक्षा : श्रीमती कुसुम महावीरप्रसाद जैन, सोनीपत	92515 74016	सदस्य : श्री संजय बोहरा जैन, मुंबई	98339 57170
श्री महेश डाकोलिया जैन, इन्दौर	महामंत्री : श्रीमती रीचा संदीप जैन, लुधियाना	79737 96548	सदस्य : श्री अतुल चोरड़िया जैन, बाघोली, पुणे	80876 35657
श्री ललित मोदी जैन, नाशिक	कोषाध्यक्षा : श्रीमती उर्मिल नरेश जैन, दिल्ली	92504 18306	सदस्य : श्री रवि जैन, दिल्ली	99996 10010
श्री सतीश बाबूसेठ लोढ़ा जैन, अहमदनगर	प्रांतीय अध्यक्ष		सदस्य : श्री रमेश कुमार जैन, 'शास्त्री' जीन्द	92554 30824
श्री सुनील मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक	श्री प्रकाश वुरड़ जैन (कर्नाटक - जोन 1)	98456 71449	प्रांतीय महामंत्री	
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	श्री विनोद कुमार कीमती जैन (तेलंगाना - जोन 1)	98490 11350	श्री नेमीचंद दलाल जैन (कर्नाटक)	99649 72251
श्री कीर्ति दुग्गड़ जैन, पुणे	श्री वी. धर्मीचन्द जैन (तमिलनाडु - जोन 1)	94444 31536	श्री किशोर कुमार मुथा जैन (तेलंगाना)	92473 99003
श्री शंभुलाल ललवानी जैन, अहमदाबाद	श्री अनिल जैन (पंजाब - जोन 2)	98141 40491	श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री	डॉ. श्री रामनिवास जैन (हरियाणा - जोन 2)	92541 19621	श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री एस. के. जैन 'सी.ए.', दिल्ली	श्री कीमतीलाल जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - जोन 2)	97203 57112	श्री संजय जैन (हरियाणा)	98130 50937
जीवन प्रकाश योजना	श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - जोन 2)	98100 62967	श्री अनुराग जैन (उत्तर प्रदेश)	98371 09567
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री बाबूलाल रांका जैन, बेंगलोर	श्री आनंद चपलोट जैन (राजस्थान - जोन 3)	94609 66507	श्री ललित ओसवाल जैन (दिल्ली)	98111 38968
राष्ट्रीय मंत्री : श्री अशोककुमार धोका जैन, बेंगलोर	श्री हुलास बेताला जैन (मध्य प्रदेश - जोन 3)	96696 97797	श्री लोकेश धाकड़ जैन (राजस्थान)	98280 50143
मानव सेवा योजना	डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - जोन 3)	98302 49151	श्री पीयूष जैन (मध्य प्रदेश)	94254 00121
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री प्रकाश भटेवरा जैन, इन्दौर	श्री मोहनलाल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-जोन 4)	94222 50478	श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री मनीष बाफना जैन, सूरत	श्री नितिन वेदमुया जैन (मुंबई-पुणे - जोन 5)	93710 75787	श्री शांतिलाल इंदरचंद दुग्गड़ जैन (महाराष्ट्र)	98220 79225
राष्ट्रीय मंत्री : श्री जितेन्द्र चोपड़ा जैन, इन्दौर	श्री सम्पत खाबिया जैन (गुजरात - जोन 5)	98250 47321	श्री गणेश ओसवाल जैन (मुंबई-पुणे)	99218 79613
जीव दया योजना	राष्ट्रीय मंत्री		श्री विनोद कुमार धोका जैन (गुजरात)	94279 30764
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु	श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बेंगलोर	93412 21774	जैन कॉन्फ्रेंस विश्वस्त मण्डल	
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रोशनलाल बड़ाला जैन 'सी.ए.', नवी मुंबई	श्री सम्पतराज कोठारी जैन, सिकन्दराबाद	92461 58452	श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन	93021 03817
ज्ञान प्रकाश योजना	श्री सुरेश गादिया जैन, चेन्नई	98402 00916	श्री बाबूलाल रांका जैन, बेंगलोर	93434 83838
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नरेश आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली	श्री राजेन्द्र बोहरा जैन, चेन्नई	98406 00003	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना	98505 00015
चेयरमैन : श्री सुरेश जैन, दिल्ली	श्री अरूण कुमार जैन, लुधियाना	98155 66885	श्री सुभाष ओसवाल जैन, नई दिल्ली	98110 45440
वाईस चेयरमैन : श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	श्री रवीन्द्र जैन, पानीपत	98960 92861	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336
वरिष्ठ उपाध्यक्ष : श्री सुरेशचंद जैन, दिल्ली	श्री नितिन जैन, बड़ौत	99993 99382	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035
राष्ट्रीय मंत्री : श्री नरेन्द्र जैन, दिल्ली	श्री नरेश जैन 'रिंढाना', दिल्ली	98100 66701	डॉ. अमितराय जैन, बड़ौत	98373 94448
वैय्यावच्च योजना	श्री दिलीप रुणवाल जैन, दिल्ली	98112 05545	श्री प्रकाश धारीवाल जैन, पुणे	98222 42795
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री अशोक रांका जैन, बेंगलोर	श्री दिनेश एम. सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
राष्ट्रीय मंत्री : श्री रतनचंद सिंघवी जैन, बेंगलोर	श्री नरेश लोढ़ा जैन, उदयपुर	93222 56788	श्री उममचंद गांधी जैन, इचलकरंजी	93260 22525
अल्पसंख्यक योजना	डॉ. सुधीर जैन, कोटा	94141 79700	श्री विनय कुमार जैन, पानीपत	83968 00000
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	श्री जितेश्वर जैन, इन्दौर	99818 50900	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400
			श्री राजीव जैन 'सी.ए.', दिल्ली	98110 42280
			श्री कांतिकुमार लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	82862 00000
			श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
			श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010



M.J. Home Furnishing

Manufacturer of Bedsheet, Mink Blanket, Bright Velvet
Dohar, Polar Blanket, AC Quilt Fabric

Alipur Khalsa, Khotpura Road, Kohand, Karnal

Mob: 8053018933, 8727890101
E-mail: mjhome025@gmail.com

Vijay Jain
National Chairman - Jain Conference, New Delhi



वर्ष	मार्गदर्शक	श्री गौतम संघेती जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94142 58370
श्री प्रेमचंद जैन, गुरुग्राम (हरियाणा)	92113 08367	श्री मांगीलाल लोढ़ा जैन, उदयपुर (राजस्थान)	88753 26779
श्री जसवंत दलाल जैन, बेंगलोर (कर्नाटक)	98863 88021	श्री शंकरलाल डांगी जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94628 83336
श्री शांतिलाल पोखरणा, बेंगलोर (कर्नाटक)	98451 55799	श्री दिनेशचन्द्र चोरड़िया जैन, उदयपुर (राजस्थान)	94141 66639
श्री महावीरचंद भण्डारी जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	98401 96758	श्री सिद्धराज सिंघवी जैन, निम्बाहेड़ा (राजस्थान)	98298 86701
श्री विमल धारीवाल जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94433 32330	श्री भूपेन्द्र सिंह पगारिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94146 17494
श्री पदमचंद बागमार जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)	94440 77990	श्री पंकज कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 11902
श्री अरिदमन जैन, लुधियाना (पंजाब)	95012 33866	श्री मीठालाल सिंघवी जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 12134
श्री जतिन्द्र जैन, लुधियाना (पंजाब)	98559 39174	श्री दीपक कुमार सूरिया जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	98293 47007
श्री विश्वा जैन, लुधियाना (पंजाब)	98140 88391	श्री राजेन्द्र गोखरू जैन, भीलवाड़ा (राजस्थान)	94141 84005
श्री राजेश जैन, लुधियाना (पंजाब)	98761 71831	श्री मनमोहन गांधी जैन, पाली (राजस्थान)	94143 26293
श्री अजय जैन, पानीपत (हरियाणा)	94161 22219	श्री अम्बालाल लोढ़ा जैन, राजसमन्द (राजस्थान)	98290 40800
श्री जगदीशचन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	98962 00081	श्री अभय पोखरणा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98930 33345
श्री जगदीश जैन, रोहतक (हरियाणा)	93556 71998	श्री अचल चौधरी जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98260 20161
श्री राजिन्द्र जैन, पानीपत (हरियाणा)	99963 33388	श्री अनिल बरड़िया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	93021 22995
श्री राजीव जैन, पानीपत (हरियाणा)	98122 00002	श्री हेमंत बोहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94074 13922
श्री राहुल जैन, करनाल (हरियाणा)	99927 33822	श्री राजकुमार जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	94253 19691
श्री संदीप जैन, सिरसा (हरियाणा)	92157 37705	श्री सुरेश देशलहरा जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	98270 31960
श्री मनमोहन जैन, मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)	98370 67082	श्री सुभाष विनायकिया जैन, इन्दौर (मध्य प्रदेश)	96302 55540
श्री सुशील जैन, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)	98100 78214	श्री चन्द्रप्रकाश चोरड़िया जैन, उज्जैन (मध्य प्रदेश)	73662 31275
श्री पारस जैन, मेरठ (उत्तर प्रदेश)	99270 62009	श्री इन्द्रमल पटवा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 28737
श्री जयप्रकाश जैन, बड़ौता (उत्तर प्रदेश)	99974 55741	श्री महेन्द्र बोथरा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98270 06500
श्री अनिल जैन 'बखेता', रोहिणी, दिल्ली	93124 33320	श्री सुजानमल कोटेचा जैन, रतलाम (मध्य प्रदेश)	98272 08682
श्री राजकुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98112 52316	श्री रवि सुराणा जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94251 01014
श्री विजय जैन, रोहिणी, दिल्ली	99994 73873	श्री यशवंत सिंह वाफना जैन, झाबुआ (मध्य प्रदेश)	94254 87623
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, रोहिणी, दिल्ली	98371 74345	श्री शांतिलाल चोरड़िया जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	98909 52621
श्री देवेन्द्र जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99716 65599	श्री संतोष मंडलेचा जैन, नाशिक (महाराष्ट्र)	99234 78889
श्री सत्यनारायण जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	92158 99904	श्री शोभाचंद संघेती जैन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)	94051 07851
श्री प्रदीप जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	99999 97513	श्री हसमुख बंबकी जैन, रत्नागिरी (महाराष्ट्र)	94224 29611
श्री रोशनलाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98100 50467	श्री जीवनराज पुनमिलया जैन, इचलकरंजी (महाराष्ट्र)	92258 31765
श्री सतपाल जैन, पीतमपुरा, दिल्ली	98102 64999	श्री हीरालाल पगारिया जैन, अहमदनगर (महाराष्ट्र)	
श्री अशोक जैन 'जयचंदा' ऋषभ विहार, दिल्ली	93109 89999	श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98201 11839
श्री भूपेन्द्र जैन, अशोक विहार, दिल्ली	98110 16545	श्री महावीरचंद तातेड़, मुंबई (महाराष्ट्र)	98699 09374
श्री लवकुमार जैन, वीरनगर, दिल्ली	88266 78626	श्री पन्नालाल कोठारी जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	
श्री नरेश जैन, पंजाबी बाग, दिल्ली	98111 30285	श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई (महाराष्ट्र)	98212 20220
श्री सुरेन्द्र कुमार जैन, शक्तिनगर, दिल्ली	98100 21710	श्री कांतिलाल बोथरा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	87882 35525
श्री राजकुमार जैन, शास्त्रीनगर, दिल्ली	98114 04140	श्री पोपटलाल ओस्तवाल जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	98230 81825
श्री मदनलाल जैन 'शामडी', प्रशांत विहार, दिल्ली	98737 76896	श्री सुभाष सुराणा जैन, पुणे (महाराष्ट्र)	97662 90002
श्री पंकज जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	88600 98595	श्री ओमप्रकाश मांडोत जैन, अंकलेशवर (गुजरात)	99250 20407
श्री संजय जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98187 25000	श्री प्यारचंद कोठारी जैन, सूरत (गुजरात)	93745 35686
श्री चक्रेश जैन, अरिहंत नगर, दिल्ली	98112 33462	श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री बजरंगलाल जैन, दिल्ली	93122 62192	श्री विनोद कुमार सूर्या जैन, खेड़ब्रह्मा (गुजरात)	93277 57610
श्री अशोक पालरेचा जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94601 71190	श्री हीरालाल खाविवा जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	94270 31776
श्री ज्ञानचंद विनायकिया जैन, ब्यावर (राजस्थान)	98140 10385	श्री चांदमल छाजेड़ जैन, मेहसाना (गुजरात)	98241 62334
श्री महावीर कुमार वाफना जैन, ब्यावर (राजस्थान)	94147 38976	श्री जयंतिलाल कोठारी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)	

(पृष्ठ 1 का शेष)

हमारा दृढ़ विश्वास है कि समाज केवल आयोजनों से नहीं, बल्कि सतत् संवाद, विचार-मंथन और रचनात्मक सहभागिता से सशक्त बनता है। अतः प्रबुद्धजनों, चतुर्विध संघ, साधु-साध्वीवृंद, श्रावक-श्राविकाओं, युवाओं और समाज सेवियों से विनम्र निवेदन है कि अपने लेख, सुझाव और सकारात्मक आलोचना के माध्यम से 'जैन प्रकाश' को समृद्ध करें। आपकी सहभागिता ही इसे समाज की सशक्त आवाज बनाएगी।

जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की समस्त गतिविधियाँ उत्साहपूर्वक संचालित हो रही हैं। फाल्गुनी चातुर्मास सन्निकट है, ऐसे में संत-सतीवृंद की वैय्यावृत्य, विहार-सेवा और धर्मारोपण में सहभागिता कर हम अपने जीवन को भी साधना के रंगों से अनुप्राणित कर सकते हैं।

4 मार्च 2026 को आध्यात्मिक होली का चातुर्मासिक पर्व श्रद्धा और साधना के साथ मनाया जाएगा। यह केवल रंगों का उत्सव नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और धर्मारोपण का विशेष अवसर है। इस पावन दिवस पर देशभर में स्थानकवासी परम्परा के पूज्य संत-साध्वीवृंद तप, त्याग और संयम की भावना से आराधना में लीन रहते हैं। होली के अवसर पर आगामी चातुर्मास की विधिवत घोषणा करने की जो परम्परा है, वह श्रमण संस्कृति की अनुशासित और दूरदर्शी परंपरा का प्रतीक है, जहाँ उत्सव भी साधना से जुड़ा है और आनंद भी आत्मकल्याण का माध्यम बनता है।

यद्यपि होलिका-दहन हमारे सिद्धांतों के अनुरूप नहीं है, तथापि इस पर्व का मूल संदेश अत्यंत गहन और जीवनोपयोगी है। यह हमें बाह्य अग्नि प्रज्वलित करने के स्थान पर अपने अंतःकरण में संचित राग-द्वेष, अहंकार, ईर्ष्या और दुष्प्रवृत्तियों का दहन करने की प्रेरणा देता है। वास्तविक होली वही है, जिसमें हम अपने मन के विकारों को जलाकर आत्मा की निर्मलता को प्रकट करें।

रंगोत्सव का यह पर्व समता और समरसता का भी प्रतीक है। जब रंगों में भीगने के बाद सभी भेद मिट जाते हैं और प्रत्येक व्यक्ति एक समान दिखाई देता है, तब वह दृश्य हमें जीवन का गूढ़ संदेश देता है, समाज में ऊँच-नीच, मतभेद और वैमनस्य का स्थान नहीं होना चाहिए। हमें एकात्म भाव, पारस्परिक सम्मान और सौहार्द की भावना को विकसित कर एक सशक्त, संगठित और संस्कारित समाज के निर्माण में योगदान देना चाहिए।

आईए, इस आध्यात्मिक होली पर हम संकल्प लें कि अपने अंतर्मन की कटुता को जलाकर प्रेम, क्षमा और सद्भाव के रंगों से जीवन को अनुप्राणित करेंगे। यही इस पर्व की सच्ची साधना और वास्तविक उत्सव है।

हार्दिक क्षमायाचना सहित समस्त पाठकों को धर्ममय, संयममय एवं उन्नत जीवन की मंगलमयी शुभकामनाएँ। आईए, हम सब मिलकर 'जैन प्रकाश' को केवल पढ़ने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज-निर्माण, विचार-संवाद और आत्मजागरण का सशक्त मंच बनाएं।



प्रमाद से प्रमोद

सजग जीवन की साधना

पुस्तक से साभार

लेखक - गुरुभक्त अतुल जैन

प्रस्तावना : अध्याय 1

यह ग्रंथ क्यों आवश्यक है ?

मनुष्य का जीवन जितना बाहर से जटिल दिखाई देता है, उतना ही भीतर से सरल है। परंतु यह सरलता तब तक अनुभव में नहीं आती जब तक हम अपनी समस्याओं की जड़ को नहीं पहचानते। अधिकांश लोग जीवन की शाखाओं को काटते रहते हैं - पर जड़ को नहीं देखते। तनाव आता है तो परिस्थिति बदलते हैं। संबंध बिगड़ते हैं तो व्यक्ति बदलते हैं। शरीर में जकड़न आती है तो औषधि खोजते हैं। पर बहुत कम लोग रुककर यह पूछते हैं - "मेरे भीतर क्या चल रहा है?" यह ग्रंथ उसी प्रश्न से जन्मा है।

प्रमाद - अदृश्य जड़

जीवन की अनेक समस्याओं का मूल एक ही है-असजगता।

जब चेतना सो जाती है, तो मन अपने पुराने संस्कारों से चलने लगता है। कर्ताभाव बढ़ता है। नियंत्रण की जिद बढ़ती है। भय गहराता है और धीरे-धीरे भीतर गाँठें बनती जाती हैं। यह गाँठें पहले मन में बनती हैं, फिर शरीर में उतरती हैं-छाती की जकड़न बनकर, नाभि का तनाव बनकर, असुरक्षा की सूक्ष्म कंपकंपी बनकर। हम उन्हें अलग-अलग नाम देते हैं, पर उनकी जड़ एक ही होती है - प्रमाद।

अनुभव की भूमि

यह पुस्तक सिद्धांतों से उत्पन्न नहीं हुई। यह उस आंतरिक अनुभव से उपजी है जहाँ कर्ताभाव ढीला पड़ा, जहाँ भय की गाँठें पिघलीं, जहाँ श्वास नाभि से जुड़कर ऊर्जा को स्थिरता में ले आई। जब व्यक्ति भीतर देखना शुरू करता है, तो उसे पता चलता है कि वह स्वयं ही अपने तनाव का निर्माता था और वही अपने मुक्त होने की संभावना भी है। इस अनुभव ने एक सत्य स्पष्ट किया-समस्या बाहर नहीं है। समस्या असजगता है।

यह ग्रंथ किसके लिए है ?

यह पुस्तक उन लोगों के लिए है जो जीवन में गंभीर हैं। जो केवल सफलता नहीं, आंतरिक संतुलन भी चाहते हैं। जो जिम्मेदारियाँ निभाते हुए भीतर थकान अनुभव करते हैं। जो आध्यात्मिक पथ पर चलते हुए कभी-कभी गिरावट का अनुभव

करते हैं। जो यह समझना चाहते हैं कि अहंकार कैसे सूक्ष्म रूप से प्रवेश करता है और सजगता कैसे उसे शांत कर सकती है।

पढ़ने की विधि

इस ग्रंथ को केवल पढ़ना पर्याप्त नहीं होगा। इसे धीरे-धीरे आत्मसात करना होगा। हर अध्याय एक दर्पण है। उसे पढ़ते समय रुकें। अपने भीतर देखें। कहाँ कर्ताभाव सक्रिय है? कहाँ नियंत्रण की जिद है? कहाँ भय छिपा है? यह पुस्तक उत्तर नहीं देती-यह देखने की दिशा देती है।

प्रमाद से प्रमोद तक

प्रमाद अचेतनता है। प्रमोद चेतना का आनंद है। यह यात्रा किसी उपलब्धि की नहीं, स्मरण की है। स्वयं को स्मरण करने की।

जब सजगता लौटती है, तो जीवन हल्का हो जाता है। जब अहंकार ढीला पड़ता है, तो संबंध सहज हो जाते हैं। जब श्वास नाभि से जुड़ती है, तो ऊर्जा संतुलित हो जाती है। यह ग्रंथ उसी संतुलन की ओर एक निमंत्रण है। यदि आप इस यात्रा के लिए तैयार हैं, तो आगे बढ़िए। परंतु धीरे। सजगता के साथ। क्योंकि यह पुस्तक पढ़ने के लिए नहीं-जीने के लिए है।

(प्रस्तावना - अध्याय 1 समाप्त)



प्रेस्टीज

प्रतिबद्ध है भारत को समृद्ध एवं प्रबुद्ध बनाने के लिये अपने सर्वश्रेष्ठ सोया प्रोटीन सोया तेल, वनस्पति, सोया बड़ी गेहूँ का आटा मैदा, रवा, सूजी और उत्कृष्ट शिक्षा K.G. से Ph.D. के द्वारा भारत को जरूरत है स्वर्ण पदकों की ओलम्पिक और नोबल पुरस्कार विजेताओं की

स्वस्थ व प्रबुद्ध भारत के लिये

प्रेस्टीज सोया खाद्य और समग्र शिक्षा

बेहतर भोजन - बेहतर शिक्षा - बेहतर राष्ट्र

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड

प्रेस्टीज फीड मिल्स लिमिटेड

प्रेस्टीज सोया इंडस्ट्रीज

प्रेस्टीज फ़ोटेक लिमिटेड

प्रेस्टीज फीड मिल्स

प्रेस्टीज फ़ैब्रिकेटर्स प्रा. लिमिटेड

प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (अंडर ग्रेजुएट्स)

प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड रिसर्च, इंदौर (पोस्ट ग्रेजुएट्स)

प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, ग्वालियर

प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, देवास

प्रेस्टीज इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड साइंस, इंदौर

प्रेस्टीज पब्लिक स्कूल, इंदौर

प्रेस्टीज ग्रुप ऑफ इन्डस्ट्रीज एंड इंस्टीट्यूट्स

स्टार एक्सपोर्ट हाउस (भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त) आई.एस.ओ. : 9000 2001 प्रमाणिक ग्रुप

30, Jaora Compound, M.Y.H. Road, Indore - 452001, M.P.

Phone.: 0731-4011111, 4041111 Fax: 4011107, 2704455 E-mail: info@prestigeindia.com Website: prestigeindia.com

प्रस्तावना - अध्याय 2

प्रमाद : समस्या नहीं, संकेत

जब जीवन में कुछ टूटता है, हम उसे समस्या कहते हैं। जब मन अशांत होता है, हम कारण बाहर खोजते हैं। जब संबंधों में कठोरता आती है, हम व्यक्ति बदलने की सोचते हैं। परंतु बहुत कम अवसरों पर हम यह पूछते हैं-क्या यह वास्तव में समस्या है? या यह किसी गहरे असंतुलन का संकेत है? प्रमाद को सामान्यतः गलती या लापरवाही समझा जाता है। परंतु प्रमाद उससे कहीं अधिक सूक्ष्म है। वह चेतना का मंद पड़ जाना है।

यह वह क्षण है जब हम स्वयं को भूल जाते हैं। संकेत को समस्या समझने की भूल जब छाती में जकड़न होती है, हम उसे शारीरिक समस्या मानते हैं। जब नाभि में तनाव होता है, हम उसे चिंता का परिणाम कहते हैं। जब मन बार-बार वही विचार दोहराता है, हम परिस्थिति को दोष देते हैं। परंतु यह सब संकेत हैं।

संकेत कि भीतर कोई आग्रह कठोर हो गया है। संकेत कि कर्ताभाव बढ़ गया है। संकेत कि नियंत्रण की जिद गहरी हो गई है। संकेत कि भय अभी भी जीवित है। यदि इन संकेतों को केवल दबा दिया जाए, तो जड़ बनी रहती है। यदि इन्हें समझ लिया जाए, तो यही संकेत मार्गदर्शक बन जाते हैं।

प्रमाद का मौन संदेश

प्रमाद कहता नहीं, दिखाता है। वह दिखाता है-कि हम अत्यधिक कर रहे हैं। कि हम परिणाम से चिपके हुए हैं। कि हम स्वयं को सिद्ध करना चाहते हैं। कि हम असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। प्रमाद चेतावनी नहीं, आमंत्रण है। वह कहता है-“रुको। भीतर देखो।”

गिरावट का महत्व

आध्यात्मिक जीवन में भी गिरावट आती है। कभी स्थिरता के बाद अस्थिरता आती है। कभी शांति के बाद बेचैनी। यह गिरावट असफलता नहीं है। यह संकेत है कि कहीं सूक्ष्म अहंकार प्रवेश कर गया है। कहीं “मैं जान गया” का भाव आ गया है। गिरावट जागरण का अवसर है-यदि उसे देखा जाए।

शरीर का सहयोग

शरीर प्रमाद का पहला संकेत देता है। छाती कसती है जब नियंत्रण बढ़ता है। नाभि सख्त होती है जब भय सक्रिय होता है। श्वास उथली होती है जब मन भविष्य में भागता है। शरीर झूठ नहीं बोलता। वह सजगता की ओर बुलाता है। यदि हम शरीर को सुनना सीख लें, तो प्रमाद प्रारंभ में ही पहचाना जा सकता है।

संकेत को समझने की कला

संकेत को समझना एक कला है। जब प्रतिक्रिया उठे-रुके। देखें। पूछें-“अभी मेरे भीतर क्या सक्रिय है?” जब बेचैनी आए-भागें नहीं। श्वास देखें। नाभि को महसूस करें। धीरे-धीरे संकेत स्पष्ट हो जाएगा।

प्रमाद का आभास

यह सुनना कठिन हो सकता है, परंतु प्रमाद का आभास होना चाहिए। क्योंकि वही दिखाता है कि हम कहाँ सो गए थे। यदि प्रमाद न हो, तो सजगता की आवश्यकता भी अनुभव में न आए। प्रमाद ही वह अंधकार है जिससे प्रकाश की खोज प्रारंभ होती है।

निष्कर्ष : प्रमाद समस्या नहीं है। वह चेतना के मंद पड़ने का संकेत है। उसे दबाना नहीं है। उसे देखना है। जैसे ही देखने की प्रक्रिया शुरू होती है, प्रमाद अपनी शक्ति खोने लगता है। और वहीं से प्रमोद की यात्रा प्रारंभ होती है।

(प्रस्तावना - अध्याय 2 समाप्त)



प्रस्तावना - अध्याय 3

अनुभव से उपजा चिंतन

सिद्धांत मन को संतुष्ट करते हैं। अनुभव चेतना को बदलता है। इस ग्रंथ की नींव किसी विचारधारा पर नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित है। यह केवल दार्शनिक व्याख्या नहीं है, यह भीतर घटित हुई प्रक्रिया का विस्तार है।

ज्ञान और अनुभव का अंतर

ज्ञान सुना जा सकता है। दोहराया जा सकता है। स्मरण किया जा सकता है। पर अनुभव जिया जाता है। किसी ने कहा-“अहंकार छोड़ दो।” यह वाक्य सरल है। पर जब तक व्यक्ति अपने भीतर कर्ताभाव की जकड़न को महसूस नहीं करता, तब तक यह केवल शब्द है। जब छाती का कसाव प्रत्यक्ष अनुभव में आए, जब नाभि की कठोरता स्पष्ट दिखे, जब भीतर का भय पहचान में आए-तब समझ जन्म लेती है।

गिरावट से उत्पन्न स्पष्टता

जीवन में एक समय ऐसा आता है जब व्यक्ति स्वयं को स्थिर

मानता है। उसे लगता है कि वह समझ चुका है। वह जान चुका है। और तभी एक झटका आता है। अचानक अशांति उठती है। तनाव गहराता है। नियंत्रण की जिद स्पष्ट हो जाती है। यह झटका विफलता नहीं था। वह दर्पण था। उसने दिखाया कि भीतर कहीं सूक्ष्म अहंकार अभी भी सक्रिय था। कहीं कर्ताभाव अब भी कठोर था। यही अनुभव जागरण की शुरुआत बना।

ऊर्जा का अनुभव

जब ध्यान ऊपर, सिर में रहता है, तो जीवन प्रयास बन जाता है। विचारों का शोर, निर्णयों का दबाव, भविष्य की चिंता-सब ऊपर केंद्रित रहता है। पर जब ध्यान धीरे-धीरे नीचे उतरता है-नाभि की ओर, श्वास की ओर, शरीर की अनुभूति की ओर-तो एक नई स्थिरता अनुभव में आती है। ऊपर प्रयास था। नीचे अस्तित्व था। यह अनुभव शब्दों से परे था। यहीं से समझ का जन्म हुआ।

ग्रंथियों का पिघलना

भीतर की गांठें अचानक नहीं खुलतीं। वे धीरे-धीरे पिघलती हैं। जब सजगता आती है, तो भय को दबाया नहीं जाता-उसे देखा जाता है। जब नियंत्रण की जिद पहचानी जाती है, तो वह धीरे-धीरे नरम होती है। जब कर्ताभाव को देखा जाता है, तो उसके साथ दूरी बनती है। यही दूरी ग्रंथियों के पिघलने की शुरुआत है।

जन्मता का जन्म

अनुभव का सबसे बड़ा परिणाम हैकृ नम्रता। जब व्यक्ति देखता है कि उसकी पीड़ा का कारण बाहरी नहीं, भीतरी आग्रह था-तो वह दूसरों को दोष देना छोड़ देता है। वह समझता है कि अहंकार सूक्ष्म है। प्रमाद सहज है। और सजगता ही मार्ग है।

अनुभव ही प्रमाण

इस ग्रंथ में जो भी कहा जाएगा, वह किसी मत का आग्रह नहीं है। यह देखने का निमंत्रण है। यदि पाठक स्वयं अनुभव करे, तो यह सत्य होगा। यदि केवल पढ़े, तो यह केवल विचार रहेगा।

निष्कर्ष : अनुभव ही वास्तविक शिक्षक है। प्रमाद की पहचान भी अनुभव से होती है। और प्रमोद की अनुभूति भी अनुभव से। आगे के अध्यायों में हम इस अनुभव को व्यवस्थित रूप में समझेंगे-ताकि देखने की प्रक्रिया स्थायी हो सके।

(प्रस्तावना - अध्याय 3 समाप्त)



प्रस्तावना - अध्याय 4

इस पुस्तक को कैसे पढ़ें ?

कोई भी आध्यात्मिक या मनोवैज्ञानिक ग्रंथ केवल पढ़ने की वस्तु नहीं होता। उसे जीना पड़ता है। यदि यह पुस्तक केवल विचार बनकर रह जाए, तो इसका उद्देश्य अधूरा रह जाएगा। इसलिए यह अध्याय पढ़ने से अधिक पढ़ने की विधि को स्पष्ट करने के लिए है।

1. यह पुस्तक ज्ञान-संग्रह के लिए नहीं है अनेक लोग पुस्तकें पढ़ते हैं ताकि उन्हें और अधिक ज्ञान मिल सके। वे विचार जोड़ते जाते हैं, पर भीतर परिवर्तन नहीं होता। यह ग्रंथ ज्ञान बढ़ाने के लिए नहीं है। यह देखने की क्षमता बढ़ाने के लिए है। यदि आप इसे पढ़कर केवल सहमत या असहमत होंगे, तो यह एक और विचार बन जाएगा। यदि आप इसे पढ़ते हुए स्वयं को देखेंगे, तो यह दर्पण बन जाएगा।

2. धीरे पढ़ें, गहराई से पढ़ें हर अध्याय के बाद रुकें। स्वयं से पूछें: क्या यह मेरे जीवन में सक्रिय है? क्या कर्ताभाव मेरे भीतर भी है? क्या मैं परिणाम से चिपका हुआ हूँ? क्या मैं नियंत्रण छोड़ने से डरता हूँ? यदि उत्तर “हाँ” है, तो वहीं रुककर उस अनुभव को महसूस करें। पढ़ना नहीं, महसूस करना अधिक महत्वपूर्ण है।

3. असहजता से भागें नहीं कुछ अध्याय पढ़ते समय असहजता उत्पन्न हो सकती है। अहंकार स्वयं को पहचानना नहीं चाहता। नियंत्रण ढीला पड़ना उसे पसंद नहीं। भय उजागर होना सहज नहीं लगता। यदि असहजता उठे, तो समझें कि आप सही स्थान पर पहुँचे हैं। वहीं से परिवर्तन शुरू होता है।

4. तुलना से बचें यह पुस्तक दूसरों को समझने के लिए नहीं है। यह स्वयं को देखने के लिए है। यदि पढ़ते समय मन कहे-“यह तो फलों व्यक्ति के लिए सही है,” तो रुकिए। यह प्रश्न पूछिए-“क्या यह मेरे लिए भी सत्य है?” तुलना प्रमाद को बनाए रखती है। स्व-दर्शन उसे तोड़ता है।

5. अनुभव को स्थान दें यदि पढ़ते-पढ़ते श्वास गहरी हो जाए, यदि नाभि में हल्कापन आए, यदि छाती ढीली लगे-तो पुस्तक बंद कर दें। कुछ क्षण मौन में बैठें। अनुभव को स्थान दें। शब्दों से अधिक मौन कार्य करता है।

6. अभ्यास के साथ पढ़ें आगे के अध्यायों में श्वास, नाभि

और सजगता के अभ्यास आएँगे। उन्हें केवल पढ़ें नहीं-करें। अनुभव के बिना यह यात्रा अधूरी है।

7. कोई निष्कर्ष जल्दी न बनाएं मन जल्दी निष्कर्ष निकालना चाहता है। वह तय करना चाहता है कि “यह सही है” या “यह गलत है।” पर यह पुस्तक निष्कर्ष के लिए नहीं, प्रक्रिया के लिए है। धीरे-धीरे समझ परिपक्व होगी।

8. अंतिम स्मरण यह पुस्तक मार्गदर्शक है। मार्ग नहीं। मार्ग आपके भीतर है। सजगता आपके भीतर है। प्रमाद भी आपके भीतर है। प्रमोद भी। यदि पढ़ते-पढ़ते आप स्वयं को अधिक स्पष्ट देखने लगे, तो समझिए कि यह पुस्तक अपना कार्य कर रही है। अब प्रस्तावना समाप्त होती है। आगे हम प्रमाद की मूल समझ में प्रवेश करेंगे।

(प्रस्तावना - अध्याय 4 समाप्त)



अध्याय 5

प्रमाद की वास्तविक परिभाषा

अब हम प्रस्तावना से आगे बढ़ते हैं और विषय के केंद्र में प्रवेश करते हैं। यदि इस ग्रंथ का एक ही मूल प्रश्न हो, तो वह है-प्रमाद क्या है? जब तक प्रमाद स्पष्ट नहीं होगा, तब तक उससे मुक्ति की दिशा भी स्पष्ट नहीं होगी।

1. सामान्य अर्थ और वास्तविक अर्थ

सामान्यतः प्रमाद का अर्थ लिया जाता है-लापरवाही, भूल, असावधानी। परंतु यह केवल बाहरी अर्थ है। वास्तविक अर्थ में प्रमाद है-चेतना की अनुपस्थिति। स्वयं से दूरी। भीतर चल रही प्रक्रिया से अनभिज्ञता। जब व्यक्ति अपने विचारों को देख नहीं रहा, अपने भय को पहचान नहीं रहा, अपने कर्ताभाव को समझ नहीं रहा-तब वह प्रमाद में है।

2. प्रमाद एक अवस्था है, घटना नहीं

भूल एक घटना है। प्रमाद एक अवस्था है। भूल कभी भी हो सकती है। पर यदि सजगता है, तो भूल सीख बन जाती है। प्रमाद वह भूमि है जहाँ भूलें बार-बार जन्म लेती हैं। जब व्यक्ति असजग रहता है, तो वही पैटर्न दोहराए जाते हैं। वही प्रतिक्रिया, वही तनाव, वही संघर्ष।

3. प्रमाद और वर्तमान का अभाव

प्रमाद का सीधा संबंध वर्तमान से है। जब मन अतीत में उलझा हो, या भविष्य में भाग रहा हो, तो वर्तमान खो जाता है। वर्तमान की अनुपस्थिति ही प्रमाद है। सजगता वर्तमान में है। प्रमाद समय के भ्रम में है।

4. प्रमाद और पहचान

प्रमाद तब गहरा होता है जब व्यक्ति अपनी पहचान से चिपक जाता है। “मैं ऐसा हूँ”, “मैं सही हूँ”, “मुझे सिद्ध करना है।” जब पहचान कठोर होती है, तो देखने की क्षमता कम हो जाती है। पहचान की रक्षा ही प्रमाद का आधार बन जाती है।

5. प्रमाद और यांत्रिकता

जब जीवन आदतों पर चलने लगे, जब प्रतिक्रियाएँ स्वाचालित हो जाएँ, जब व्यक्ति बिना रुके बोलता और निर्णय लेता रहे-तो जीवन यांत्रिक हो जाता है। यांत्रिक जीवन प्रमाद है। सजग जीवन में ठहराव होता है। देखने का विराम होता है।

6. शरीर में प्रमाद

प्रमाद केवल मानसिक नहीं है। जब श्वास उथली हो, जब छाती तनी हुई हो, जब नाभि कठोर हो-तो समझना चाहिए कि भीतर कोई आग्रह सक्रिय है। शरीर प्रमाद को छिपने नहीं देता। वह संकेत देता है।

7. सूक्ष्म प्रमाद

प्रमाद हमेशा स्पष्ट नहीं होता। कभी वह सेवा में छिपा होता है। कभी आध्यात्मिक अभ्यास में। कभी नेतृत्व में। जब व्यक्ति सोचता है कि “मैं जागरूक हूँ,” और वहीं रुक जाता है-तो सूक्ष्म प्रमाद जन्म लेता है।

8. प्रमाद की पहचान कैसे हो ?

स्वयं से तीन प्रश्न पूछें: क्या मैं अभी प्रतिक्रिया दे रहा हूँ? क्या मैं परिणाम से चिपका हुआ हूँ? क्या मैं स्वयं को सिद्ध करना चाहता हूँ? यदि उत्तर “हाँ” है, तो सजगता कम हो गई है। यही प्रमाद है।

9. प्रमाद का निष्कर्ष

प्रमाद कोई दोष नहीं है। वह स्मरण की कमी है। जैसे ही स्मरण लौटता है, प्रमाद समाप्त हो जाता है। स्मरण किसका? स्वयं का। अपने भीतर के साक्षी का। यहीं से आगे की यात्रा प्रारंभ होती है-प्रमाद की जड़ से अहंकार की ओर।

(अध्याय 5 समाप्त)



अध्याय 6

आलस्य और प्रमाद में अंतर (गहन विस्तार)

प्रमाद को समझने में सबसे बड़ी भूल यह होती है कि उसे आलस्य मान लिया जाता है। जब कोई कार्य छूट जाता है, जब निर्णय टल जाता है, जब सजगता कम हो जाती है, तो व्यक्ति सहज ही कह देता है-“मैं आलसी था।” “मुझे प्रमाद हो गया।” परंतु यह कथन आधा सत्य है। प्रश्न यह है-क्या प्रमाद केवल आलस्य है? या वह कुछ और गहरा है? यदि यह अंतर स्पष्ट न हो, तो व्यक्ति जीवन भर कारण गलत पकड़ता रहेगा और समाधान भी गलत दिशा में खोजेगा।

1. आलस्य की वास्तविक प्रकृति

आलस्य शरीर और मन की ऊर्जा से जुड़ा हुआ है। जब शरीर थका हो, जब विश्राम की आवश्यकता हो, जब मानसिक श्रम अधिक हुआ हो, तो स्वाभाविक रूप से गति धीमी होती है। यह प्राकृतिक है। यह दोष नहीं है। आलस्य में व्यक्ति भीतर जानता है कि उसे विश्राम चाहिए। यदि वह विश्राम ले ले, तो ऊर्जा पुनः लौट आती है। आलस्य अस्थायी है। वह परिस्थितिजन्य है और उसका समाधान शारीरिक-मानसिक संतुलन में है।

2. प्रमाद की गहराई

प्रमाद ऊर्जा का प्रश्न नहीं है। वह चेतना का प्रश्न है। व्यक्ति अत्यंत सक्रिय हो सकता है-दिन भर कार्य कर सकता है, निर्णय ले सकता है, नेतृत्व कर सकता है, परंतु भीतर से असजग हो सकता है। वह कार्य कर रहा है, पर स्वयं को नहीं देख रहा। वह बोल रहा है, पर भीतर के आग्रह को नहीं पहचान रहा। वह निर्णय ले रहा है, पर भय या अहंकार को नहीं देख रहा। यही प्रमाद है। यहाँ ऊर्जा प्रचुर है, पर दिशा अचेतन है।

3. सक्रिय प्रमाद - सबसे सूक्ष्म

निष्क्रिय व्यक्ति को पहचानना आसान है। पर सक्रिय प्रमाद को पहचानना कठिन है। जो व्यक्ति अत्यधिक जिम्मेदार है, जो सब संभालता है, जो हर स्थिति में उपस्थित रहता है-वह भी प्रमाद में हो सकता है। यदि उसके भीतर कर्ताभाव कठोर है, यदि परिणाम से चिपकाव है, यदि नियंत्रण की जिद है-तो उसकी सक्रियता सजगता नहीं है, बल्कि प्रमाद है। सक्रिय प्रमाद अधिक खतरनाक है, क्योंकि वह उपलब्धि के रूप में दिखाई देता है।

4. निष्क्रिय प्रमाद

निष्क्रिय प्रमाद में व्यक्ति टालता है। वह कठिन संवाद से बचता है। वह आवश्यक निर्णय को आगे बढ़ाता है। वह अपने भय का सामना नहीं करता। ऊपर से यह आलस्य दिखता है। पर भीतर देखें तो वहाँ भय छिपा होता है। वह असफलता से बच रहा है। वह अस्वीकार से बच रहा है। वह असुविधा से बच रहा है। यह आलस्य नहीं-असजगता है।

5. समाधान का भेद

यदि आलस्य है-तो विश्राम पर्याप्त है। यदि प्रमाद है-तो विश्राम पर्याप्त नहीं। प्रमाद के लिए चाहिए : रुकना। देखना। भीतर सक्रिय भाव को पहचानना। यदि व्यक्ति केवल सोकर, छुट्टी लेकर, या वातावरण बदलकर समस्या हल करना चाहे, तो वह अस्थायी राहत पा सकता है-पर जड़ बनी रहेगी।

6. आध्यात्मिक पथ पर भ्रम

आध्यात्मिक जीवन में यह भ्रम और गहरा है। कोई ध्यान नहीं करता क्योंकि थका है-यह आलस्य है। पर कोई ध्यान करता है पर भीतर अपने अहंकार को नहीं देखता-यह प्रमाद है। कोई सेवा करता है पर भीतर मान्यता की इच्छा है-यह प्रमाद है। कोई मौन रहता है पर भीतर प्रतिक्रिया चल रही है-यह प्रमाद है। बाहरी अनुशासन भीतरी सजगता की गारंटी नहीं है।

7. पहचान की सूक्ष्म विधि

स्वयं से ईमानदारी से पूछें : क्या मैं सचमुच थका हूँ? या मैं किसी सत्य को देखने से बच रहा हूँ? क्या मुझे विश्राम चाहिए? या मुझे अपने भय को स्वीकार करना है? यदि भीतर हल्की बेचौनी है, यदि टालने के पीछे कोई डर है, तो यह आलस्य नहीं-प्रमाद है।

8. ऊर्जा और चेतना का संतुलन

जीवन में दो संतुलन आवश्यक हैं : ऊर्जा का संतुलन और चेतना का संतुलन। ऊर्जा गिरती है तो आलस्य आता है। चेतना गिरती है तो प्रमाद आता है। आलस्य शरीर को छूता है। प्रमाद अस्तित्व को।

9. अंतिम स्पष्टता

आलस्य ऊर्जा की थकान है। प्रमाद चेतना की थकान है। आलस्य विश्राम से मिटता है। प्रमाद स्मरण से। और स्मरण किसका? उस साक्षी का जो देख सकता है कि अभी मैं सो गया हूँ। यही देखना जागरण की शुरुआत है।

(अध्याय 6 - गहन संस्करण समाप्त)



अध्याय 7

सजगता बनाम स्वचालित जीवन (गहन विस्तार)

मनुष्य स्वयं को स्वतंत्र समझता है। उसे लगता है कि वह सोचकर निर्णय लेता है, समझकर प्रतिक्रिया देता है और अपनी इच्छा से जीवन जीता है। परंतु यदि जीवन को गहराई से देखा जाए, तो स्पष्ट होता है कि अधिकांश जीवन स्वचालित ढंग से चलता है। यही स्वचालितता प्रमाद है। और उसी के विपरीत सजगता है।

1. स्वचालित जीवन क्या है?

स्वचालित जीवन वह है जहाँ व्यक्ति अपने अतीत के पैटर्न से संचालित होता है। किसी ने कुछ कहा-तुरंत प्रतिक्रिया। कोई विरोध हुआ-तुरंत आक्रोश। कोई अस्वीकार मिला-तुरंत आहत अहंकार। यह सब इतना तेज होता है कि व्यक्ति को लगता है वह “स्वाभाविक” व्यवहार कर रहा है। वास्तव में वह अपने संस्कारों का दास है।

2. संस्कार और पैटर्न

हर अनुभव मन में एक छाप छोड़ता है। प्रशंसा मिली-मन ने पहचान बना ली। आलोचना मिली-मन ने रक्षा तंत्र बना लिया। असफलता मिली-मन ने भय को जमा कर लिया। धीरे-धीरे यह सब पैटर्न बन जाते हैं। जब वर्तमान में कोई परिस्थिति इन पैटर्न को छूती है, तो प्रतिक्रिया स्वचालित हो जाती है। यही स्वचालित जीवन है।

3. स्वचालित जीवन के संकेत

स्वचालित जीवन की पहचान कैसे करें? बार-बार वही संघर्ष। बार-बार वही संबंधों में तनाव। बार-बार वही आंतरिक बेचौनी। बार-बार वही नियंत्रण की जिद। यदि जीवन में दोहराव है, तो समझिए पैटर्न सक्रिय हैं। जहाँ पैटर्न हैं, वहाँ प्रमाद है।

4. सजगता क्या है?

सजगता का अर्थ है-प्रतिक्रिया और स्वयं के बीच दूरी। जब क्रोध उठे और आप उसे देख लें तो आप क्रोध नहीं हैं। जब भय उठे और आप उसे पहचान लें-तो आप भय नहीं हैं। यह देखने की क्षमता ही सजगता है।

5. विराम की शक्ति

स्वचालित जीवन में विराम नहीं होता। सजग जीवन में एक क्षण का ठहराव होता है। कोई कुछ कहे-और उत्तर देने से पहले एक श्वास लें। उस श्वास में देखें-अभी भीतर क्या सक्रिय है? यह छोटा विराम पूरे जीवन की दिशा बदल सकता है।

6. शरीर और स्वचालितता

स्वचालित प्रतिक्रिया में शरीर तुरंत सक्रिय हो जाता है। दिल की धड़कन बढ़ती है। श्वास उथली हो जाती है। छाती कठोर हो जाती है। यह पिहीज-वत-सिपहीज तंत्र है। यदि इस क्षण सजगता न हो, तो व्यक्ति उसी प्रतिक्रिया में बह जाता है। यदि सजगता हो, तो वह श्वास को गहरा कर सकता है। और प्रतिक्रिया शांत हो सकती है।

7. स्वचालित जीवन का खतरा

स्वचालित जीवन का सबसे बड़ा खतरा यह है कि व्यक्ति स्वयं को पहचान ही नहीं पाता। वह समझता है-“मैं ऐसा ही हूँ।” पर वास्तव में वह अपने अतीत का संग्रह है। जब तक यह देखा नहीं जाता, व्यक्ति परिवर्तन की संभावना खो देता है।

8. सजग जीवन की शुरुआत

सजग जीवन किसी बड़ी क्रांति से शुरू नहीं होता। वह छोटे-छोटे क्षणों से शुरू होता है। जब आप बोलते समय स्वयं को देखें। जब निर्णय लेते समय भीतर के आग्रह को पहचानें। जब श्वास को महसूस करें। जब नाभि को स्थिर करें। धीरे-धीरे देखने की आदत बनती है। और स्वचालितता कमजोर होने लगती है।

9. स्वचालित से साक्षी तक

स्वचालित जीवन में आप परिस्थिति के दास हैं। सजग जीवन में आप साक्षी हैं। परिस्थिति वही रहती है। लोग वही रहते हैं। पर भीतर की स्थिति बदल जाती है। जहाँ साक्षी है, वहाँ स्वतंत्रता है।

10. अंतिम स्पष्टता

स्वचालित जीवन प्रमाद है। सजग जीवन जागरण है। एक में अतीत बोलता है। दूसरे में वर्तमान जीवित रहता है। यदि २आप अपने भीतर विराम पैदा कर सकें, तो स्वचालित जीवन टूटने लगेगा। और वहीं से प्रमाद से प्रमोद की यात्रा वास्तव में प्रारंभ होगी।

(अध्याय 7 - गहन संस्करण समाप्त)



अध्याय 8

अचेतन प्रतिक्रियाओं की प्रकृति (गहन विस्तार)

मनुष्य स्वयं को विचारशील प्राणी मानता है, परंतु उसके जीवन का बड़ा भाग विचार से नहीं, प्रतिक्रिया से संचालित होता है। प्रतिक्रिया इतनी तीव्र और स्वचालित होती है कि व्यक्ति को लगता है-“मैंने निर्णय लिया।” वास्तव में निर्णय नहीं हुआ था, अतीत ने प्रतिक्रिया दी थी। अचेतन प्रतिक्रिया ही प्रमाद की सबसे जीवित अभिव्यक्ति है।

1. प्रतिक्रिया और उत्तर में अंतर

प्रतिक्रिया तुरंत होती है। उत्तर ठहराव से आता है। प्रतिक्रिया में जागरूकता नहीं होती। उत्तर में देखने की प्रक्रिया शामिल होती है। प्रतिक्रिया अतीत से आती है। उत्तर वर्तमान से जन्म लेता है। जहाँ प्रतिक्रिया है, वहाँ प्रमाद है। जहाँ उत्तर है, वहाँ सजगता है।

2. प्रतिक्रिया का स्रोत - भय

हर तीव्र प्रतिक्रिया के पीछे कोई न कोई भय छिपा होता है। अस्वीकृति का भय। अपमान का भय। नियंत्रण खोने का भय। असफलता का भय। जब कोई परिस्थिति इन भय को छूती है, तो प्रतिक्रिया उठती है। व्यक्ति सोचता है कि वह परिस्थिति पर प्रतिक्रिया दे रहा है। पर वह वास्तव में अपने भय पर प्रतिक्रिया दे रहा होता है।

3. स्मृति की भूमिका

मन स्मृति का संग्रह है। जो अनुभव हमने जिए हैं, वे मन में छाप बनकर रहते हैं। जब वर्तमान में कोई घटना पुरानी छाप से मिलती-जुलती होती है, तो मन तुरंत वही पुरानी प्रतिक्रिया दोहरा देता है। यही कारण है कि अक्सर प्रतिक्रिया परिस्थिति से अधिक तीव्र होती है। वर्तमान छोटा होता है, अतीत भारी।

4. पहचान की रक्षा

अहंकार अपनी छवि की रक्षा करता है। यदि कोई हमारी छवि को चुनौती दे, तो प्रतिक्रिया तुरंत उठती है। कोई कहे- “आप गलत हैं।” तो भीतर से आवाज आती है-“मुझे सिद्ध करना है।” यह सत्य की रक्षा नहीं, पहचान की रक्षा है। और पहचान की यह रक्षा अचेतन प्रतिक्रिया को जन्म देती है।

5. शरीर की तत्क्षण प्रतिक्रिया

अचेतन प्रतिक्रिया केवल मानसिक नहीं है। शरीर तुरंत प्रतिक्रिया करता है। श्वास उथली। हृदय गति तेज। मांसपेशियाँ कठोर। नाभि सख्त। यह जैविक तंत्र खतरे के समय उपयोगी है। पर जब हर मानसिक असहमति खतरे जैसी महसूस हो, तो शरीर निरंतर तनाव में रहता है। यह दीर्घकालीन प्रमाद का रूप है।

6. प्रतिक्रिया का चक्र

प्रतिक्रिया - परिणाम - नई स्मृति - नया पैटर्न - अगली प्रतिक्रिया यदि यह चक्र न टूटे, तो जीवन दोहराव बन जाता है। एक ही प्रकार के संघर्ष। एक ही प्रकार की पीड़ा। एक ही प्रकार की असंतुष्टि। जब तक प्रतिक्रिया को देखा नहीं जाता, चक्र चलता रहता है।

7. सजगता का हस्तक्षेप

चक्र टूटता कैसे है? जब प्रतिक्रिया उठते ही व्यक्ति उसे देख ले। “अभी मेरे भीतर क्रोध उठ रहा है।” “अभी मैं स्वयं को सिद्ध करना चाहता हूँ।” “अभी मैं आहत हुआ हूँ।” यह देखने का क्षण प्रतिक्रिया को उत्तर में बदल सकता है। सजगता प्रतिक्रिया की ऊर्जा को शांत कर देती है।

8. प्रतिक्रिया को दबाना नहीं

यह समझना आवश्यक है कि सजगता का अर्थ दमन नहीं है। यदि क्रोध उठे और आप उसे दबा दें, तो वह अवचेतन में चला जाएगा। यदि क्रोध उठे और आप उसे देखें, तो उसकी तीव्रता कम होने लगेगी। देखना उपचार है। दमन रोग है।

9. स्वतंत्रता की शुरुआत

अचेतन प्रतिक्रियाएँ व्यक्ति को उसके ही अतीत का कैदी बना देती हैं। जब सजगता आती है, तो व्यक्ति देखता है कि वह परिस्थिति से बड़ा है। वह प्रतिक्रिया से बड़ा है। यह पहचान स्वतंत्रता की शुरुआत है।

10. अंतिम स्पष्टता

अचेतन प्रतिक्रिया प्रमाद का सक्रिय रूप है। सजग उत्तर जागरण का प्रारंभ है। यदि आप प्रतिक्रिया के बीच एक श्वास का विराम ला सकें, तो जीवन की दिशा बदल सकती है। वही विराम प्रमाद से प्रमोद की पहली सीढ़ी है।

(अध्याय 8 - गहन संस्करण समाप्त)



(क्रमशः अगले अंक में)

8 मार्च महिला दिवस पर

- सरिता कैलाशचंद्र जैन, देवास (मध्य प्रदेश)

महिला चाहे दादी-नानी हो, अम्मा-चाची, या ननद-भाभी हो सबसे पहले तो वह बेटी होती है जब जीवन यात्रा शुरू होती है तो वह नये-नये रिश्तों से जुड़ती जाती है और समर्पण भाव से उन्हें निभाती है, और फिर सारे रिश्ते उसकी गहनी परछाई में अपने को सुरक्षित पाते हैं। उसी बेटी के सम्मान में...

“बेटी की जीवन यात्रा” बेटा-बेटी नहीं है बराबर, बेटी तो है एक पायदान ऊपर। बेटा जाता घोड़ी पर चढ़कर, इस बात का उसको है अहं। बेटी जाती डोली में बैढ़कर, उसका अपना है अहं। ससुराल है अब उसका घर, पीहर बन जाता है दूसरा घर। बेटा कर सकता नहीं ऐसा काम, बेटी तो है कई गुणों की खान। बेटी में है ममता-समता, दया, क्षमा और करुणा। पीढ़ी दर इनको पहुँचाती रहती, कमला, विमला, आशा और अरुणा। धीरे-धीरे इन गुणों का अंकुरण, बन जाता है बरगद का पेड़। जिसकी जड़े हैं इतनी गहरी, हिला नहीं सकता कोई भी कारण। उसके संस्कारों की छाया में, फलते-फूलते हैं दोनों परिवार। बेटा-बेटी नहीं है बराबर, बेटी तो है एक पायदान ऊपर। सरल नहीं है इस पर चलना, मुश्किलों से भरी है डगर। बेटी तो है एक पायदान ऊपर।



सौभाग्यमुनि जी म.सा. : जन-जन के सौभाग्य

दस दिसम्बर 1937 की चितौड़गढ़ के आकोला ग्राम में जन्म लेने वाले सुजानमल गांधी जब पाँचवी कक्षा के विद्यार्थी थे बहिन उगमबाई के विधवा हो जाने से मन परिवर्तन हो गया बाद में मेवाड़ भूषण मोतीलाल जी म. के आकोला चातुर्मासिक सान्निध्य से सुजान मुमुक्षु बना गया। तथा दीक्षा लेने का दृढ़ निश्चय कर लिया। संघर्षपूर्ण वैराग्य काल में आप अरावली की पर्वत श्रेणियों में ‘रामा’ गाँव में तीन माह तक अज्ञातवास में रहे। फिर उदयपुर जिले के कड़िया ग्राम में 2 फरवरी 1950 को गाँव के बाहर विशाल वटवृक्ष के नीचे प्रातः 9:30 बजे सादगीपूर्ण वातावरण में पू. प्रवर्तक गुरुदेव श्री अम्बालाल जी म.सा. के शिष्य रूप में आप सुजान से सौभाग्य मुनि के रूप में अवतरित हुए।

श्री सौभाग्य मुनि जी म. “कुमुद” बचपन से ही तीक्ष्ण बुद्धि विनम्र विद्या अनुरागी रहे हैं। आपने सम्पूर्ण क्षमता अध्ययन की ओर लगाई। परिणाम स्वरूप जैन शास्त्रों के गंभीर तत्वज्ञान के उपरान्त विभिन्न दर्शनों का गहराई से अध्ययन किया। संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी आदि के विशिष्ट अध्येता आपश्री अच्छे कवि रहे। आपकी कई काव्य पुस्तकें छपी हैं। आप

श्रेष्ठतम वक्ता और बहुत अच्छे रचनाकार रहे। साहित्य की दिशा में ही नहीं आपका समाज की दिशा में कर्तव्यपुंज मेवाड़ ही नहीं पूरे भारतवर्ष में चमका। 1987 के साधु-सम्मेलन में आपको महामंत्री पद मिला जिसे आपने बखूबी निभाया। श्रमण संघ की एकता व अखण्डता के लिए आप सदैव प्रयत्नशील रहे फलतः आप “श्रमण संघ गौरव” कहलाए।

राजस्थान के अलावा आपश्री ने गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु और कन्याकुमारी तक पद विहार किया। आप प्रखर वक्ता, उदभट कवि, लेखक, मेवाड़ महानायक, अदभुत नेतृत्व क्षमता वाले संगठन प्रहरी, मिलनसार, स्नेहिल और आध्यात्मिक, शैक्षणिक, समाजिक और परमार्थिक संस्थाओं के प्रबल प्रणेता रहे। कुमुद प्रवचन, कौमुदी, अर्न्तयात्रा, देहरी के दीप, शास्वत स्वर, मानस के राजहंस, स्वस्थ चिंतन, अन्तः-अभ्युदय, चिंतामृत स्वर्णिम पदचिन्ह, चटकती कलिया, महकते फूल, गीतो का गुलदस्ता, संगीत पुष्पलता, गीतो का अमृत भाग 1-2, विष विजय पाप पराजय, अनाथ मुनि, चन्दन मरिया गीरी, संगीत कुमुद, काव्य कुमुद, दिव्य महावीर, वृत विहार आदि कई साहित्य सर्जनकर्ता रहे। ऐसे महान गुरु के दीक्षा दिवस पर शत-शत वन्दन, नमन।

जैन धार्मिक अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन

बैंगलोर (कर्नाटक) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा के तत्वावधान में विल्सन गार्डन में जैन धार्मिक अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आचार्य आगमसूरी एवं धारियाश्री के सान्निध्य में कुल 18 टीमों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। टीमों ने विभिन्न धार्मिक राउंड्स में भाग लेकर धार्मिक गीतों व प्रस्तुतियों से वातावरण को भक्तिरस से सराबोर कर दिया। प्रथम पुरस्कार गीत मंडल-हीराबाग, द्वितीय पुरस्कार बहु मंडल-हीराबाग, तृतीय पुरस्कार पद्मावती मंडल-येलगुंडपाल्या व चतुर्थ पुरस्कार जैन महिला मंडल-मारथल्ली को दिया गया। प्रांतीय अध्यक्ष संतोषबाई आच्छा ने आभार प्रकट किया। इस मौके पर प्रांतीय महिला अध्यक्षा संतोषबाई आच्छा, चेयरपर्सन रसीला मरलेचा, प्रांतीय महिला महामंत्री सपना सिंघवी, वरिष्ठ महिला उपाध्यक्षा इंदिरा गादिया, प्रांतीय महिला कोषाध्यक्षा स्नेहलता बाफना, सज्जनराज बोहरा, गौतम कटारिया, प्रकाश बाफना, महेंद्र बोहरा, मोनिश मुथा व जितेश, महिला शाखा से शांताबाई मांडोट, संतोषबाई पुंगलिया, ललिता खिंवसरा आदि मौजूद थे।

नरेला में स्थानक हॉल एवं नवनिर्मित लिफ्ट का उद्घाटन

दिल्ली : रविवार 25 जनवरी 2026 को महाश्रमण पू. श्री आनंदमुनि जी म.सा., युवा मनीषी पू. श्री रितेशमुनि जी म. सा. एवं प्रवचन प्रभाकर पू. श्री दीपेशमुनि जी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में जैन स्थानक स्वतंत्र नगर, नरेला दिल्ली में नवनिर्मित लिफ्ट एवं स्थानक हॉल में नवकार महामंत्र का लोकार्पण समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेंद्रजी जैन, वरिष्ठ मंत्री श्री दीपकजी जैन, पूर्वी दिल्ली जैन महासंघ के अध्यक्ष श्री अशोकजी जैन एवं अन्य गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे।

प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

माता-पिता को भूलना नहीं

- अनोखीलाल कोठारी



माता बालक की प्रथम गुरु है, इसलिए वह प्रथम पूजनीय, वन्दनीय एवं स्मरणीय है। वेदों में भी माता-पिता को प्रथम दर्जा दिया है। मातृ-पितृ देवो भव, गुरु देवो भव। इसलिए माता-पिता को कभी मत भूलना। माता-पिता की सेवा भगवान से भी बढ़कर है। माता-पिता को खुश रखना, भगवान को खुश रखने के बराबर है। माता-पिता की महानता असीम है, जिसका कोई भी बेटा जितना बखान करे उतना ही कम है। वे सागर जैसी गहरी व गंभीर है।

माता-पिता ने तुम्हारा मुखड़ा देखने के लिए क्या नहीं किया अर्थात् दर-दर जाकर खाक छानी है। माता-पिता के तुम्हारे ऊपर अनगिनत उपकार हैं, जिन्हें चुकाया नहीं जा सकता। यदि कोई बेटा अपने तन की चमड़ी से जूती बनाकर भी पहनाए तो भी वह माता-पिता के उपकारों से ऋण मुक्त नहीं हो सकता। माता ने तुम्हारे जन्म होने के पूर्व पूरे नौ महीने तुम्हें संभालकर रखा है, तुम केवल नौ दिन ही पेट के ऊपर रख कर दिखा दो या गले से लगाकर बता दो। जिस माता ने तुम्हें अपना कलेजा निकालकर दे दिया, अपना अमृतमयी हृदय अमीयरस (दुग्धपान) पिलाया, उस प्यारी ममता की देवी को भोली भाली माता को कभी नहीं भूलना। जिसने तुम्हारे मल-मूत्र साफ किए। स्वयं गीले में सोई, तुम्हें सुखे में सुलाया, ऐसी पालनहार माता को भूल मत जाना। जिसने तुम्हें अमृतमयी लोरिया सुनाकर सुख की नींद में सुलाया, उन्हें तुम कभी कड़वे, जहरीले वचन न सुनाना। माता की जिन प्यारभरी आँखों ने अमृतमयी मुस्कान से जो तुम्हें प्यार दिया, उन आँखों को कभी भूलकर भी आँसुओं से गीला मत करना। जिस माता-पिता ने तुम्हारी राह में फूल बिछाए, उसकी राह में तुम कभी काँटे मत बिछाना।

नारियल के ऊपर का भाग कठिन होता है किन्तु उसके अंदर में अमृत जैसा निर्मल पानी भरा रहता है। उसी प्रकार पिता की कृति व प्रकृति भी उसी के ही अनुरूप होती है। पिता अपनी संतान की सुखद भलाई के लिए सदैव परिस्थिति का सामना करने वाला, विषम परिस्थिति से चार हाथ करने वाला एवं अपने परिवार के लिए अपने स्वयं के सुख-दुःख को भूलकर सदैव उनकी सुख-समृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहने वाला एक महामानव है। वह स्वयं भूखा-प्यासा रहकर अपनी संतान के सुख के लिए दिन-रात श्रम करने वाला एक उच्च श्रेणी का व्यक्ति है। वह स्वयं सूर्य की तेज धूप में खड़ा रहकर अपनी संतान को शीतल व सुखद छाया देता है। सुखद एवं व्यवस्थित गृहस्थी को चलाने के लिए और बढ़ती मंहगाई का सामना करने के लिए निकट एवं दूरगमन करने के लिए संकोच नहीं करता। जगतजननी माता की कोमल हथेली को आधार देने वाला वज्र के समान उसका दृढ़ हाथ होता है। वह अपनी पुरानी मधुर स्मृतियों को भूलता नहीं एवं भविष्य के प्रति आशावादी रहते हुए वर्तमान को आनन्दमय बनाकर समाधान पूर्वक जीता है।

पिता अपनी संतान को यशस्वी देखकर प्रसन्न होता है। वह किसी भी परिस्थिति में अपना मेरुदण्ड उन्नत रखता है। पिता के नाम की महत्ता कुछ और ही है। उसका वर्णन करना शब्दों से परे है और वह महत्ता कविता की चार पंक्तियों में नहीं समाती और न ही अलंकृत शब्दों में नापी जा सकती है। जैसे गुलाब के फूल की सुगंध एक शीशी में नहीं भरी जा सकती, वैसे ही पिता के हृदय में भरी करुणा, आत्मीयता एवं प्रेम शब्दातीत है। पिता रूपी परिजात पुष्प का जीवन इतना ही उन्नत एवं सत्यम् शिवम् सुन्दरम् है और उसे समझने के लिए उसी के रूप में आना आवश्यक है। इसीलिए ऐसे महामानव को पिता के नाम से संबोधित किया जाता है। पैसों से तुम्हें दुनियाँ की सारी चीजे मिल सकती हैं पर जन्म देने वाले माता-पिता नहीं।

तुम भले नगर सेठ हो गए हों, परन्तु तुम्हारे माता-पिता खुश नहीं हैं, उनको शांति नहीं है तो वो लाखों खाक के बराबर हैं। अतः माता-पिता को कभी भूले नहीं, देवता के रूप में देखें एवं सेवा करें।



R. Mahaveer Chand Ranka

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक - जैन कॉन्फ्रेंस

9444204046

E mail : rmrjainplr@gmail.com



JAIN PETRO
Reliance Petroleum Retail Outlet,
Diversion Road, Polur 606-603

OXFORD
MATRIC HR. SEC SCHOOL
KANNAR, POLUR - 606-603

OXFORD
COLLEGE OF ENGINEERING POLUR
KANNAR, POLUR - 606-603



M. Rajeshkumar Ranka

प्रांतीय महामंत्री - जैन कॉन्फ्रेंस, तमिलनाडु

9994916455

E mail : rajplr246jj@gmail.com

जैन भवन में राष्ट्रचिंतन से जुड़े वरिष्ठ विचारकों का सौहार्दपूर्ण आगमन

नई दिल्ली : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के केन्द्रीय कार्यालय जैन भवन, दिल्ली में 4 फरवरी 2026 को राष्ट्र एवं समाज जीवन से जुड़े प्रतिष्ठित विचारकों का गरिमामय आगमन हुआ। इस अवसर पर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक विमर्श टोली जी के प्रमुख श्री मुकुल कानिटकरजी, जम्मू कश्मीर स्टडी सेंटर के निदेशक श्री आशुतोष भटनागर जी, विश्व हिंदू परिषद (VHP) के अंतर्राष्ट्रीय संयुक्त महासचिव श्री सुरेन्द्र जैन जी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के केंद्रीय टोली सदस्य (विमर्श) एवं राष्ट्रीय संयोजक श्री ज्योति कोठारीजी, समस्त महाजन संस्था के अध्यक्ष तथा भारतीय जीव-जंतु कल्याण बोर्ड (भारत सरकार) के सदस्य श्री गिरीशभाई शाह, भारतीय राजस्व सेवा के वरिष्ठ अधिकारी श्री कमल कुमार जी जैन (IRS),



आयकर कमिशनर के साथ ही अन्य अनेक महानुभावों का जैन भवन में आत्मीय आगमन हुआ।

जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से

राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुल जी जैन, राष्ट्रीय महामंत्री प्रो. डॉ. अमितराय जी जैन, मुख्य राष्ट्रीय समन्वयक श्री प्रशान्त जी जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री विपुल जी जैन एवं अन्य राष्ट्रीय पदाधिकारियों द्वारा सभी गणमान्य अतिथियों का सौहार्दपूर्ण चर्चावार्ता के उपरांत हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर समाज, राष्ट्र, संस्कृति एवं समसामायिक विषयों पर सकारात्मक एवं प्रेरणादायी संवाद हुआ, जो संगठनात्मक दृष्टि से अत्यंत उपयोगी एवं मार्गदर्शक रहा। यह भेंट, मुलाकात, विचार-सामंजस्य, सामाजिक समन्वय और राष्ट्रहित में संवाद की भावना को और अधिक सुदृढ़ करने वाली सिद्ध हुई।

जैन कॉन्फ्रेंस गुजरात प्रांतीय महिला शाखा की प्रथम बैठक सफलतापूर्वक संपन्न

वेसु-सूरत (गुजरात) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, गुजरात महिला शाखा की प्रथम प्रांतीय बैठक गुरु पुष्कर भवन, वेसु (सूरत) में अत्यंत गरिमामय एवं अनुशासित वातावरण में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। यह बैठक संगठनात्मक सुदृढ़ता, महिला सशक्तिकरण तथा भावी कार्य योजनाओं को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध हुई।



सदस्याएं उपस्थित रही।

इस अवसर पर राष्ट्रीय महिला मार्गदर्शिका श्रीमती कंचन जी भोगर जैन, राष्ट्रीय महिला चैयरमैन श्रीमती डॉ. अनामिका जी तलेसरा जैन, राष्ट्रीय महिला उपाध्यक्षा श्रीमती मीना जी रांका जैन एवं राष्ट्रीय महिला मंत्री श्रीमती रेनू जी बोकड़िया जैन की गरिमामयी उपस्थिति ने बैठक की शोभा बढ़ाई। साथ ही अहमदाबाद से पथारी मार्गदर्शिकाएं श्रीमती चंदा जी खाबिया जैन एवं श्रीमती चंद्रकांता जी नाहर जैन ने अपने अनुभवपूर्ण मार्गदर्शन से बैठक को नई दिशा प्रदान की।

बैठक की अध्यक्षता गुजरात प्रांतीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सरिता जी कूकडा जैन ने की। कार्यक्रम का कुशल एवं प्रभावी संचालन सह-कोषाध्यक्षा श्रीमती सुनीता जी चोरड़िया जैन द्वारा किया गया। बैठक में प्रांतीय महिला महामंत्री श्रीमती ममताजी विश्लोत जैन, महिला कोषाध्यक्षा श्रीमती कंचन जी मेहता जैन, महिला सह-कोषाध्यक्षा श्रीमती सुनीता जी चोरड़िया जैन सहित गुजरात प्रांत महिला उपाध्यक्षा, प्रांतीय महिला मंत्री, प्रांतीय महिला संगठन मंत्री, प्रांतीय महिला प्रचार-प्रसार मंत्री तथा अनेक महिला पदाधिकारी एवं

बैठक के दौरान महिला सशक्तिकरण, सामाजिक सेवा, धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा संगठन विस्तार जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तृत एवं सार्थक विचार-विमर्श किया गया। आगामी समय में समाजहित में रचनात्मक कार्यों, सेवा प्रकल्पों एवं जागरूकता अभियानों को प्रभावी रूप से लागू करने का सर्वसम्मति से संकल्प लिया गया।

प्रेषक : ममता विश्लोत जैन

जैन कॉन्फ्रेंस राजस्थान प्रांत द्वारा उदयपुर में मानव सेवा कार्य

उदयपुर (राजस्थान) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारियों और राजस्थान प्रांतीय पदाधिकारियों के आथित्य में मीडिया संचार योजना के राष्ट्रीय मंत्री श्री लक्ष्मीलाल जी वीरवाल जैन एवं राष्ट्रीय महिला मंत्री श्रीमती सूरज जी जैन की ओर से जैन कॉन्फ्रेंस के बैनर तले उदयपुर महाराणा भूपाल चिकित्सालय में मरीजों के साथ रहने वाले सहायकों को बुधवार 4 फरवरी 2026 को प्रातः मानव सेवा समिति के तहत करीब 200 मरीजों के सहायकों को भोजन कराया गया।

इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नेमीचंद जी धाकड़ जैन, राष्ट्रीय वरिष्ठ मार्गदर्शक श्री शंकरलाल जी डांगी जैन, राष्ट्रीय महिला उपाध्यक्षा श्रीमती सुषमा जी धाकड़ जैन, प्रांतीय मंत्री श्री हीरालाल जी नावेडिया जैन, श्री हिम्मत जी बडाला जैन, एडवोकेट श्री सुंदर जी माण्डावत जैन, श्री नरेंद्र जी सेठिया जैन के आथित्य में आयोजन किया गया एवं संचालक श्री प्रकाश जी वर्डिया जैन, श्री कुंदन जी भटेवरा जैन आदि कार्यकर्ताओं के द्वारा सेवा सराहनीय रही।

नव वर्ष पर श्रावक-श्राविकाओं ने सुना मंगल पाठ

सूरत (गुजरात) : अवध संगरीला के आत्म-भवन के प्रांगण में श्रमण संघीय चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट पूज्य डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में नूतन वर्ष के मंगल पाठ का आयोजन हुआ। आये हुए श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं को नववर्ष की बेला पर अपना आशीर्वाचन प्रदान करते हुए आचार्य भगवन् ने फरमाया कि नया साल आपके जीवन में नई खुशियाँ, नई उमंग, नया उत्साह-उल्लास और सफलताएं लेकर आए। नया साल हमें सीख प्रदान करते हुए कहता है बीते कल से सीखें, आज में जीएं और आने वाले कल को बेहतर बनाएं। नववर्ष केवल तारीख बदलने का नाम नहीं है। यह आत्म-चिंतन, आत्म शुद्धि एवं आत्म-विकास का अवसर है।

जीवन में क्या पाना चाहते हैं, आप अवलोकन करें! यह वर्ष 'आत्म ध्यान वर्ष' घोषित किया गया है। उन ध्यान शिविरों का आपने अनुभव लिया है।

प्रभु की कृपा बरसी, वीतराग साधिका निशा जी ने ध्यान करवा देश-विदेश में लोगों ने ध्यान का लाभ लिया। विश्व में आनन्द, ज्ञान, शांति फैली। महावीर की अहिंसा, मैत्री, करुणा विश्व में फैली। चारों तरफ विश्व में युद्ध के बादल मण्डरा रहे हैं। ध्यान मन का विषय नहीं है। आज विश्व में बहुत प्रकार के ध्यान किये जाते हैं। किन्तु आत्म-ध्यान भगवान महावीर स्वामी की साधना का सार यह ध्यान आपका आमूलचूल परिवर्तन करता है।

आत्म भवन अवध संगरीला में आचार्य भगवन् की शीतकालीन आत्म ध्यान मौन साधना निर्वार्ध गति से प्रवहमान है। आचार्यश्री जी की साधना 17 अप्रैल तक गतिमान रहेगी तत्पश्चात् दिनांक 20 अप्रैल 2026 को अक्षय तृतीया वर्षोत्प पारणा महोत्सव का आयोजन शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन के तत्वावधान में लब्धि पार्श्वनाथ तीर्थ धाम में संभावित है।

वी.आर.टी.सी. ब्लाइंड स्कूल में मानव सेवा कार्यक्रम

लुधियाना (पंजाब) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस युवा शाखा पंजाब द्वारा वी.आर.टी.सी. ब्लाइंड स्कूल, किचलू नगर में मानव सेवा कार्यक्रम का आयोजन बड़े ही हर्ष एवं पुण्य भावना के साथ किया गया। इस सेवा कार्यक्रम में लाभार्थी रविन्द्र जैन-रीटा जैन, लक्की जैन-डिम्पी जैन, सवश जैन मैसर्ज श्री घंटाकर्ण इंडस्ट्रीज ने अपने पूरे परिवार के साथ सम्मिलित होकर सेवा कार्य में सहभागिता निभाई। कार्यक्रम के दौरान वी.आर.टी.सी. ब्लाइंड स्कूल के बच्चों द्वारा भावपूर्ण

भजन प्रस्तुति दी गई, जिसने उपस्थित सभी लोगों को भाव विभोर कर दिया।

इसके उपरांत बच्चों को प्रेमपूर्वक रोटी एवं पेस्ट्री वितरित की गई। कार्यक्रम में जैन कॉन्फ्रेंस की मुख्य बॉडी से श्री मंधीरजी जैन (राष्ट्रीय मंत्री), श्री अनिलजी जैन 'टीटू' (प्रांतीय अध्यक्ष), श्री अभयजी जैन, श्री सतीशजी जैन 'टोनी', युवा शाखा के प्रांतीय अध्यक्ष श्री विनयजी जैन, संगठन मंत्री श्री अभयजी जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य श्री हर्षवर्धनजी जैन, प्रांतीय मुख्य मार्गदर्शक

श्री राजीवजी जैन, श्री लवजी जैन नाहर, श्री आदिशजी जैन नाहर, श्री अभिषेकजी जैन, श्री मुकेशजी जैन, श्री गगनजी जैन, श्री आदित्यजी जैन आदि मौजूद थे। कार्यक्रम के अंत में श्री विनयजी जैन ने कहा कि मानव सेवा ही सच्ची आराधना है। उन्होंने कहा कि जब परिवार सहित सेवा की जाती है तो उसका पुण्य कई गुना बढ़ जाता है। उन्होंने सभी लाभार्थी परिवारों, पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं वी.आर.टी.सी. ब्लाइंड स्कूल प्रशासन का हृदय से धन्यवाद व्यक्त किया।



S.K. Jain

NAMOKAR METALS

Deals in: Ferrous Non Ferrous & All Kinds of Industrial Scrap

Plot No.-5, SarurPur Ind. Area.

Nangla gujran, Near Nagar chowk, Faridabad

E-mail : namokarmetals@gmail.com Mobile : 9811601241



अंकुर जैन

राष्ट्रीय युवा चैयरमैन
जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

एक दिवसीय, चार दिवसीय एवं दस दिवसीय ऑनलाइन आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ

सूरत (गुजरात) : 20 जनवरी से 29 जनवरी 2026 तक एक दिवसीय, चार दिवसीय एवं दस दिवसीय आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ का आयोजन शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन, नाशिक (महाराष्ट्र) में हुआ। यह शिविर केवल नाशिक केन्द्र पर ही आयोजित हुआ जिसमें एक दिवसीय आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ में 19, चार दिवसीय आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ में 19 एवं दस दिवसीय आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ में 39 आत्मारथी

साधक सहभागी बने। तीनों शिविरों में कुल 77 साधक सहभागी रहे। आचार्य भगवन् एवं प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनिजी म.सा. के आशीर्वाद एवं वीतराग साधिका निशा जी के दिशा निर्देशन में यह शिविर संचालित हुआ। सभी साधक अधिक से अधिक संख्या में आत्म-ध्यान धर्म यज्ञ में भाग लेकर शुक्ल-ध्यान की आराधना में संलग्न हों। सभी आत्मारथी साधक अपनी साधना में आगे बढ़ें।

श्राविका रत्न सम्मान एवं होली मिलन समारोह सम्पन्न

उदयपुर (राजस्थान) : श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा राजस्थान प्रांत द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस



के उपलक्ष्य में दिनांक 27 फरवरी 2026 को देवेंद्र धाम में श्राविका रत्न सम्मान एवं होली मिलन समारोह का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि श्रीमती रजनीजी डांगी जैन एवं मुख्य अतिथि श्रीमती पूर्णिमाजी बोकाड़िया जैन उपस्थित रहीं। समारोह का शुभारंभ मंगलाचरण से हुआ, जिसे पुष्पाजी सुराणा जैन, पुष्पाजी मोदी जैन, मंजूजी मेहता जैन एवं किरणजी खोखावत जैन ने भावपूर्ण स्वर में प्रस्तुत किया।

प्रांतीय महिला अध्यक्षा डॉ. पुष्पाजी खोखावत जैन ने स्वागत उद्बोधन देते हुए सभी वरिष्ठ श्राविकाओं को संस्कारों की निर्मात्री बताया एवं होली पर मुस्कराकर, मन से प्रेम व सद्भाव का रंग लगाने की सलाह दी। महामंत्री डॉ. शिल्पाजी नाहर जैन ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। विशिष्ट अतिथि श्रीमती रजनीजी डांगी जैन ने अपने संबोधन में कहा कि हमारी वरिष्ठ महिलाएँ समाज की अमूल्य धरोहर हैं, जिनसे सेवा, समर्पण एवं त्याग की प्रेरणा मिलती है।

इस अवसर पर कमला देवी जी हरकावत, पूर्णिमा भूतालिया, कमल जी रांका, सुशीला जी डांगी, प्रेमबाई जी, सुशीला जी मेहता, प्रेमबाई जी गोखरू, कंचनदेवी जी चंडालिया, पिस्ताबाईजी सिसोदिया, बसंतलताजी का खमेसरा, भागवतीजी कोठारी, सुशीलाजी मेहता, शांताबाईजी बोहरा आदि 20 माताओं को श्राविका रत्न सम्मान से सम्मानित किया एवं तिलक होली का संकल्प लिया। इस मौके पर अध्यक्ष डॉ. पुष्पाजी जैन, डॉ. शिल्पाजी नाहर, रेखाजी चोरडिया, नैनाजी सिसोदिया, रेखाजी जैन, मीनूजी छाजेड़, मंजूजी मेहता, पुष्पाजी सुराणा, पुष्पाजी मोदी, कुसुमजी डांगी, किरणजी खोखावत, अनिताजी भंडारी, रेखाजी नवलखा आदि उपस्थित थीं। राजस्थान प्रांतीय महिला शाखा की सभी सदस्यों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। कार्यक्रम का सुंदर संचालन नयनाजी सिसोदिया एवं डॉ. शिल्पाजी नाहर ने किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ होली के गीतों एवं आनंदमय वातावरण में कार्यक्रम का समापन हुआ।

तप-त्याग सामायिक दिवस से मनाया गया गुरु गणेश का पुण्य स्मरण दिवस

चेन्नई (तमिलनाडु) : श्री एस.एस. जैन संघ के तत्वावधान में स्वर्ण संयम आराधक पूज्य श्री वीरेन्द्रमुनि म.सा. के सान्निध्य में कर्नाटक गजकेसरी पूज्य श्री गणेशलालजी म.सा.की 53वीं पुण्यतिथि बकिट रोड़ टी.नगर स्थित माम्बलम जैन स्थानक में जप तप, त्याग, 1-1 सामायिक, मानवसेवा, अन्नदान व परोपकार कार्यों के साथ मनायी गयी। कार्यक्रम का प्रारम्भ श्री वीरेन्द्रमुनिजी म.सा.के मंगलाचरण से हुआ। उन्होंने श्री गणेशलालजी म.सा. के व्यक्तित्व व कृतित्व पर विस्तार पूर्वक

प्रकाश डाला।

मुख्य अतिथि श्री सुभाषचन्द्रजी रांका एवं श्री विमलचन्द्रजी धारीवाल जैन ने गुरु स्मरण करते हुए टी.नगर संघ द्वारा की जा रही साधू साध्वियों की सेवा व परोपकार कार्यों की भूरी भूरी प्रशंसा की। संघ अध्यक्ष डॉ. उत्तमचन्द्र गोठी जैन ने आगंतुक श्रावक श्राविकाओं एवं गणमान्य लोगों का भाव अभिनंदन कर अत्र विराजित गुरुदेव का आभार व्यक्त किया। इस मौके में चेन्नई महानगर के कई उपनगरों के गुरुभक्तों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश कार्यकारिणी समिति मीटिंग का उत्साहवर्धक वातावरण के बीच पूर्वी पीतमपुरा में सफल आयोजन

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुलजी जैन की गरिमामयी उपस्थिति से हुज्रा ऊर्जा का संचार

नई दिल्ली : रविवार, 15 फरवरी 2026 को जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश कार्यकारिणी समिति का आयोजन दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी जैन की अध्यक्षता में किया गया, जिसमें दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों से महानुभावों की उपस्थिति उत्साहजनक रूप से रही।



मीटिंग संचालन का शुभारम्भ करते हुए प्रांतीय महामंत्री श्री ललितजी ओसवाल जैन ने मंच सज्जा के उपरान्त मीटिंग में पधारे जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय पदाधिकारियों सहित दिल्ली प्रदेश के कार्यकारिणी समिति सदस्यों का शाब्दिक स्वागत-अभिनन्दन किया गया। प्रांतीय महामंत्री श्री ललितजी ओसवाल जैन ने मीटिंग के लिए निर्धारित एजेण्डा के अनुरूप सर्वप्रथम मंगलाचरण करने के लिए श्रीमती रूबीजी जैन को मंच पर आमंत्रित किया। तत्पश्चात दिवंगत साधु-साध्वीवृन्द व प्रमुख श्रावक-श्राविकाओं को श्रद्धांजलि कार्यकारी महामंत्री श्री सन्दीपजी जैन 'सोनू' द्वारा दी गई, इसके बाद महामंत्री द्वारा विगत कार्यकारिणी समिति तथा वर्तमान कार्यकाल के पिछले एक वर्ष में किए गए कार्यों का विवरण प्रस्तुत करने के साथ ही भविष्य की योजनाओं पर भी प्रकाश डाला।

मीटिंग के दौरान जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अतुलजी जैन ने जहाँ अपनी उपस्थिति को मंगल मिलन के रूप में बताया वहीं उन्होंने उनके राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचने में दिल्ली के प्रबुद्धजनों के प्रति आभार प्रकट करने के साथ जैन कॉन्फ्रेंस को समाज की पहुँच में लेकर जाने के लिए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में डिजिटली सक्षम बनाने की बात कही, स्थानकवासी परम्परा के लगभग 1300 श्रमण-श्रमणियाँ को आध्यात्म का प्रबल स्रोत बताते हुए कहा कि उनकी सुखसाता के लिए भी हम कार्य योजनाएं बना रहे हैं। उन्होंने जैन भवन के उपरी तल में एक शोध केन्द्र बनाने की बात करने के साथ अन्य अनेक योजनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि समय की मांग है कि अब संस्था के संविधान को वर्तमान सन्दर्भों के परिप्रेक्ष्य में संशोधित किया जाए।

प्रांतीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी जैन ने जहां राष्ट्रीय अध्यक्ष जी के कार्यों की अनुमोदना की वहीं उन्होंने जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश की ओर से किए जा

रहे समाजसेवा, जीवदया, वरिष्ठजनों का सम्मान व पर्यावरण के प्रति जागरूकता के सन्दर्भ में अपने दायित्वों को निभाने की जानकारी दी। उन्होंने जैन समाज के सभी वर्गों के धर्मावलम्बियों को आह्वान करते हुए कहा कि निकट भविष्य में होने वाली जनगणना में अपने नाम के साथ "जैन" अवश्य लिखें। उन्होंने कहा कि "जैन" शब्द न लिखने के कारण सरकारी आंकड़ों में हमारी जनसंख्या 40 से 42 लाख तक ही अटकी हुई है, उन्होंने उद्घोष करते हुए कहा कि जनगणना में "अब की बार, जैन डेढ़ करोड़ के पार"। श्री जितेन्द्र जी जैन ने जानकारी देते हुए कहा कि भगवान महावीर जन्म कल्याणक के अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली प्रदेश द्वारा उत्तरी पीतमपुरा जैन स्थानक में तीन दिवसीय निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया जाएगा।

मीटिंग के सफल समापन से पूर्व मेजबान पूर्वी पीतमपुरा श्रीसंघ के प्रधान श्री संजयजी जैन ने जहां जैन कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष जी को पूर्वी पीतमपुरा में मीटिंग आयोजन करने के लिए धन्यवाद दिया वहीं उत्तरी पीतमपुरा श्रीसंघ प्रधान श्री जयभगवान जैन 'रिठाला' ने नेत्र शिविर आयोजन हेतु स्थान उपलब्ध कराने के लिए अपनी स्वीकृति सहर्ष प्रदान की।

इस मीटिंग में जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय अध्यक्ष के अलावा राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री जसवंतजी जैन, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेशजी जैन 'काहनी', राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री जयकुमारजी जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रामनिवासजी जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री नरेशजी जैन, श्री दिलीपजी रूणवाल जैन, राष्ट्रीय महिला अध्यक्षा श्रीमती सन्तोषजी जैन, राष्ट्रीय युवा अध्यक्षा श्री विपुलजी जैन, ज्ञान प्रकाश योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री सुरेश कुमार जी जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री नरेंद्रजी जैन, दिल्ली प्रदेश युवा अध्यक्षा श्री विनीतजी जैन सहित लगभग 100 सदस्यों की उपस्थिति से मीटिंग को सामाजिक समन्वय का आकर्षक स्वरूप प्राप्त हुआ।

प्रेषक : ललित ओसवाल जैन

399वाँ मानव सेवा, अन्नदान, साधर्मिक कार्यक्रम आयोजित

चेन्नई (तमिलनाडु) : भगवान महावीर सेवा समिति द्वारा 399वाँ मानव सेवा कार्यक्रम समारोहपूर्वक आयोजित किया गया। सेवा समिति के संस्थापक डॉ. उत्तमचन्द्र गोठी जैन ने बताया कि माम्बलम संघ में चातुर्मास के दरम्यान, मरुधर केसरीजी म.सा. की जन्म जयंती प्रसंग पर एक प्रवचन से प्रभावित होकर सेवा समिति का शुभारंभ हुआ। अनाथालयों, वृद्धाश्रम, चिल्ड्रन होम्स, स्कूलों आदि में लगभग डेढ़ लाख से भी ज्यादा लोगों को इस संस्था द्वारा भोजन एवं आवश्यक सामग्री उपलब्ध करवाई जा चुकी है।

विशाल मैडिकल कैम्प इस संस्था द्वारा आयोजित किये जा चुके हैं। इसके साथ ही गौशाला में चारा, रोटियाँ एवं साधर्मिक भाई-बहनों को राशन एवं दवाईयाँ भी सेवा समिति पर हर अमावस्या को प्रदान की जाती हैं। इस मौके पर पिछले सहयोग देने वाले सभी दानदाताओं का बहुमान माला, शाल से दोनों मुख्य अतिथि के हाथों से करवाया गया। साधर्मिक भाई-बहनों को राशन किट व दवाईयाँ वितरित की गई। कार्यक्रम का संचालन संघ मंत्री व सेवा समिति संस्थापक डॉ. उत्तमचन्द्र गोठी जैन ने किया।



श्री ओंकारसिंह जी सिरया जैन का संधारे सहित देवलोकगमन

उदयपुर (राजस्थान) : जिनशासन, श्रमण संघ, श्रमण संघ के नायक जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं श्री अंबा गुरु शोध संस्थान (उदयपुर) के अध्यक्ष आदरणीय सुश्रावक श्री ओंकारसिंहजी सिरया जैन ने 9 फरवरी 2026 को संधारे के साथ अपने नश्वर शरीर का त्याग कर दिया। उनके जाने से जैन समाज में भी एक अभाव हुआ है।

जिनशासन, श्रमण संघ, श्रमण संघ के नायक आचार्यश्री के प्रति उनके रोम-रोम में श्रद्धा थी। उनका परिवार और समाज उनकी प्रेरक स्मृतियों तथा योगदान को चिरस्थायी बनाए। उनके योगदान, साधना व सद्गुणों का पुनीत स्मरण करते हुए हम उन्हें जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रव्यापी परिवार की ओर से भावपूर्ण नमन और हार्दिक श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

DEALS IN NON LEATHER FOOTWEAR

ALDACO FOOTWEAR

9310899901 | Aldacofootwear@gmail.com

Sudershan Jain
National Chairman – Jan Kalyan Yojana
Jain Conference, New Delhi

SS1008 ₹1490/-		SM-4 ₹1325/-	LP-28 ₹875/-
AI-cs-flx-112 ₹1490/-		LP-32 ₹875/-	SM-5 ₹1375/-